संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०२
वर्ष : ३१ अंक : ३ (निरंतर अंक : ३४५)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य बापूजी का ५८वाँ
त्मसाक्षात्कार दिवस : ७ अक्टूबर

तोड़ जल जल में मिलाया,
जल प्रकाश आकाश समाया ।
स्वरूप का ज्ञान दृढ़ाया,
ढाई दिवस ब्रह्मानंद छाया ।।

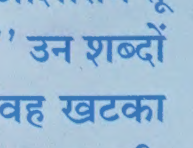


पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

मेरे सद्गुरुदेव की कृपा के बाद भी मेरे चित्त में कभी-कभी थोड़ा संदेह होता था । एक बार गुरुदेव ने सत्संग करते-करते मेरे ऊपर दृष्टि डालते हुए कहा : "कुछ लोग सोचते हैं कि 'हमें अभी ऐसा होना चाहिए, अभी और थोड़ा... ।' मैं गीता सिर पर उठा के बोलता हूँ कि जो लीलाशाह है, वह आशाराम तू है । जो मैं हूँ वह तू है, जो तू है वह मैं हूँ ।" उन शब्दों में क्या कृपा थी ! क्या संकल्प था ! वह खटका निकल गया ।

- पूज्य बापूजी





अपने हृदय को आत्मज्ञान का कवच चढ़ा लो

- पूज्य बापूज

अपने को खोजो तो ईश्वर मिलेगा और ईश्वर को खोजो तो भी अपना आपा मिल जायेगा - ऐसा जो कभी नहीं मरता है वह ईश्वर है। अब खोजो 'कौन नहीं मरता ?' 'शरीर मरने के बाद भी जो मरता न है वह कैसा है ? कहाँ है ?' खोजो। सुख-दुःख आया तो खोजो 'किसको हुआ ?' इसने दुःख दिया, इ सुख दिया... ऐसा तो अल्प मति के लोग मानते हैं। अरे ! सारा संसार सुख-दुःख के ताने-बाने से चलता है। राग-द्वेष से, निंदा-स्तुति से ही सारे संसार का खेल है। इसी खेल में से खिलाड़ी (सा आत्मस्वरूप) को समझ के अपना छक्का मार के पार हो जाओ। सदा किसीको सुख नहीं मिलता, स किसीको दुःख नहीं मिलता। सदा कोई शत्रु नहीं रहते, सदा कोई मित्र नहीं रहते - यह सब होता रहता कोई तरंग सदा चलती है क्या ? और बिना तरंग के दरिया होता है क्या ? तरंग जहाँ है, है और दरि गहराई में ज्यों-का-त्यों है। ऐसे ही आपका आत्मा भी गहराई में ज्यों-का-त्यों है। मन की तरंगों में संस की सब आपा-धापी - हईशो-हईशो... चलती रहती है। 'ऐसा हो जाय, वैसा हो जाय...' इस झंझट मत पड़, यह तो चलता रहेगा। भगवान के पिताश्री भी संसार को ठीक नहीं कर सके। भगवान आये उस समय भी संसार ऐसा-वैसा था, अब भी ऐसा-वैसा है... यह तो चलता रहेगा। ऐसा हो जाय तो अच्छा, वैसा हो जाय तो अच्छा... इसमें मत पड़। तू तो अपने पैरों में जूते पहन ले बस ! सारे जंगल में से काँटे-कंकड़ हट जायें यह सम्भव नहीं है लेकिन अपने पैरों में जूते पहन ले तो तुझे काँटे-कंकड़ न लगेंगे ! ऐसे ही अपने हृदय को आत्मज्ञान का कवच चढ़ा ले तो तुझे संसार के काँटे-कंकड़ न चुभेंगे, बस !



ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३१ अंक : ३ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३४५
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०२१
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०७८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
७९६१२१०७१४ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

इस अंक में...

साधक किस संग से बचे और कैसा संग करे ?

- पूज्य बापूजी

आत्मज्ञान पाया नहीं, आत्मा में स्थिति अभी हुई नहीं, अभ्यास और वैराग्य हैं नहीं तो ऐसे साधक के लिए शास्त्रकार कहते हैं और अनुभवी महापुरुषों का अनुभव है कि हलकी वृत्ति के लोगों के बीच उठना-बैठना साधक के लिए हानिकारक है । जो मंदमति हैं, जिनका आचार-विचार, खान-पान मलिन है और जिनकी दृष्टि मलिन है, ऐसे लोगों के बीच वैराग्यवाले साधक का वैराग्य भी मंद हो जाता है और अभ्यासवाले का अभ्यास भी मंद हो जाता है । इसलिए हमेशा ऐसे पुरुषों के संग में रहना चाहिए जिनके संग से वैराग्य बढ़े और अभ्यास में रुचि हो, तो अपना कल्याण होगा ।



अभ्यास और वैराग्य में रुचि न हो ऐसे व्यक्तियों के पास रहने से अथवा जिनकी चेष्टा मलिन है, आजीविका मलिन है - पाप से कमाते हैं और खर्चने में भी पाप करते हैं एवं देखने में भी पाप करते हैं, ऐसे लोगों के सम्पर्क में और स्पर्श या स्पंदनों में साधक रहता है तो उसका भी अभ्यास-वैराग्य मंद हो जाता है । जो महापुरुष हैं, जिनकी उन्नत, ब्राह्मी दृष्टि है, आत्माभ्यास जिनका सदा स्वाभाविक होता रहता है, उन पुरुषों की शरण में रहने से साधक का उत्थान जल्दी होता है । इसलिए श्रीमद् राजचन्द्र की बात हमको यथार्थ लगती है । उन्होंने कहा कि ''जब तक आत्मप्रकाश न हो, आत्मस्थिति न हो तब तक व्यक्ति महापुरुषों की शरण में अनाथ बालक की नाईं पड़ा रहे । महापुरुषों की चरणरज सिर पर चढ़ाये ।'' **इसका मतलब यह नहीं कि पैरों को जो मिट्टी छूई उसे सिर पर घुमाते रहें । कहने का तात्पर्य है कि जैसे चरणरज उनके शरीर को छूती है ऐसे ही उनके हृदय को छूकर जो अनुभव की वाण निकलती है, वह शिरोधार्य करें । यह है चरणर का आधिदैविक स्वरूप । आधिभौतिक स्वरू तो पैरों को जो मिट्टी लगी वह है ।**

श्रीमद् राजचन्द्रजी की सेवा में लल्लूज नामक एक साधक रहते थे । एक दिन लल्लूजी राजचन्द्रजी को पूछा : ''मैं घर-बार छोड़कर अपने पुत्र, पत्नी - सब छोड़ के और मिल्कियत का दान-पुण्य करके यहाँ सेवा लग गया हूँ । इतने वर्ष हुए, अभ तक मुझे आत्मा का अनुभ नहीं हुआ, पूर्णता का तो अनुभ नहीं हुआ है, ऐसा क्यों ?''

राजचन्द्र एक मिनट वे लिए मौन हो गये फिर कहा : ''लल्लूजी ! लोग की नजर में तो तुम बड़े बुद्धिमान हो लेकिन अपन बेटे, पत्नी, एक घर छोड़कर इधर कई घरवालों स कितना परिचय बना लिया है और कितनी व्यर्थ क बातचीत करते हो... दो-चार व्यक्तियों का संबंध छोड़ के कितने व्यक्तियों से आसक्तिवाला संबंध करते हो... एक घर की रोटी छोड़ के कितने घर का, जिस-किसीके डिब्बे का क्या-क्या लेते-देते खाते हो... तो अब तुम्हारी वृत्ति अभ्यास-वैराग्य में तो लगती नहीं ! वृत्ति अभ्यास-वैराग्य में लगेग नहीं और मलिन चित्तवाले लोगों के साथ ज्याद सम्पर्क में रहोगे तो फिर आत्मानुभव कैसे होगा ? **हमारे चरणों में रहने का मतलब है कि हमारे संकेत को मानकर उसमें डट जाओ ।**''

बुद्धिमान थे लल्लूजी, तुरंत उनको अपनी गलती समझ में आयी और लग गये अभ्यास-वैराग्य बढ़ाने में । ☐

श्री रमण महर्षि के साथ प्रश्नोत्तर

प्रश्न : मनुष्य सच्चे सद्गुरु का निश्चय कैसे कर सकता है ? सद्गुरु का वास्तविक स्वरूप क्या है ?



महर्षि : जिनके साथ आपके चित्त का स्वाभाविक मेल हो जाता है वे सद्गुरु हैं । यदि आप पूछें कि 'सद्गुरु का निश्चय किन लक्षणों से किया जाय ?' तो इसका उत्तर है कि उनमें शांति, धैर्य, क्षमा इत्यादि गुण होने चाहिए । वे दृष्टि से चुम्बक की तरह दूसरों को आकृष्ट करने की शक्तिवाले होने चाहिए एवं सबके प्रति समदर्शी होने चाहिए । जिनमें ये गुण हों वे सच्चे गुरु हैं । लेकिन यदि आप सद्गुरु के स्वरूप को जानना चाहें तो प्रथम आपको अपना स्वरूप जानना चाहिए । यदि कोई अपना स्वरूप नहीं जानता तो वह गुरु के स्वरूप को कैसे जानेगा ? **यदि आप सद्गुरु के वास्तविक स्वरूप को जानना चाहते हैं तो आपको सम्पूर्ण विश्व को गुरुरूप देखने का अभ्यास अवश्य करना चाहिए ।** साधक को सब प्राणियों में गुरु के दर्शन करने चाहिए । ईश्वर के विषय में भी यही सत्य है । सब पदार्थों को ईश्वररूप देखने का अभ्यास प्राथमिक भूमिका है । जो मनुष्य अपने आत्मा को नहीं जानता वह ईश्वर के अथवा गुरु के वास्तविक स्वरूप को कैसे जान सकता है ? वह उसका निर्णय कैसे करेगा ? अतः पहले अपने स्वरूप को जानिये ।

प्रश्न : इसे जानने के लिए भी गुरु की आवश्यकता नहीं है ?

महर्षि : हाँ, यह सत्य है । (अर्थात् आवश्यकता है ।)

प्रश्न : मोक्षप्राप्ति के लिए गुरुकृपा का मर्म क्या है ?

महर्षि : मोक्ष आपसे बाहर कहीं नहीं है, आपके भीतर है । **यदि मनुष्य में मोक्ष की सच्ची प्रबल इच्छा हो तो आंतरिक गुरु उसे अंदर की ओर खींचते हैं और बाह्य गुरु उसे आत्मा की ओर मोड़ते हैं । यह गुरु के अनुग्रह का मर्म है ।**

प्रश्न : कुछ लोग प्रचार करते हैं कि आपके मतानुसार गुरु की आवश्यकता नहीं है । कुछ अन्य लोग इससे ठीक उलटी बात कहते हैं । इस विषय में आपका क्या कहना है ?

महर्षि : मैंने कभी नहीं कहा कि गुरु की आवश्यकता नहीं है । ❐



गुरुकृपा से स्वराज्यप्राप्ति

– श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी

मैं सबका आत्मा, सर्वरूप, सबसे परे और अद्वितीय हूँ तथा केवल अखंड ज्ञानस्वरूप और निरंतर आनंदरूप हूँ । हे गुरो ! आपकी कृपा और महिमा के प्रसाद से मुझे यह स्वराज्य-साम्राज्य की विभूति प्राप्त हुई है । आप महात्मा को मेरा बारम्बार नमस्कार हो ।

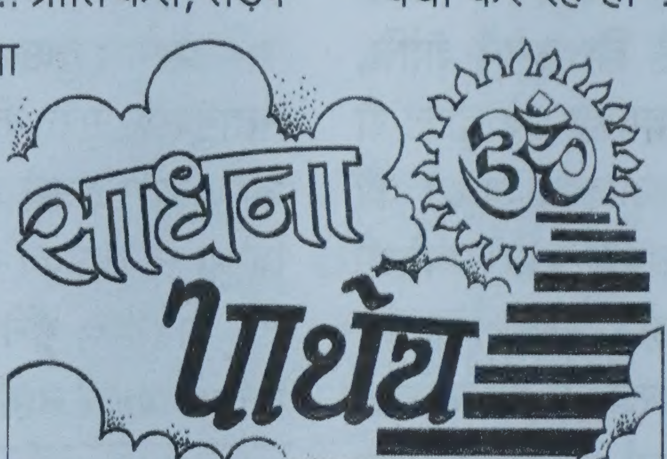
मैं माया से प्रतीत होनेवाले जन्म, जरा और मृत्यु के कारण अत्यंत भयानक महास्वप्न में भटकता हुआ दिन-दिन नाना प्रकार के तापों से संतप्त हो रहा था, हे गुरो ! अहंकाररूपी व्याघ्र से अत्यंत व्यथित मुझ दीन को निद्रा से जगाकर आपने मेरी बहुत बड़ी रक्षा की है ।

(विवेक चूड़ामणि : ५१७-५१९) ❐

लग जाओ बस ! अपने-आप सब सरल हो जाता है

- पूज्य बापूजी

लोग बोलते हैं कि 'आत्मसाक्षात्कार का सरल उपाय बताइये, सरल उपाय बताइये ।' तो आत्मसाक्षात्कार करके बाद में क्या चाय पीने जाना है, देर होती है क्या ? 'जल्दी है और सरल उपाय बता दो ।' तो कोई रेलगाड़ी पकड़नी है क्या ? हजारों जन्मों की यात्रा, हजारों जन्मों के कर्मों-बंधनों का अंत करके परमात्मा को पाना है... उसमें सरल-सरल... जल्दबाजी नहीं... प्रीति करो, तड़प बढ़ाओ । भई, शुरू-शुरू में बच्चा कहे कि ''पढ़ने का सरल उपाय बता दो ।'' तो उसको A, B, C, D सिखायें । बोले : ''नहीं, नहीं... सरल बता दो ।'' '१, २...' लिख के बतायें । बोले : ''नहीं, यह नहीं, सरल बता दो ।'' तो क्या खाक पढ़ेगा ! जो बताया है वह करेगा तभी पढ़ेगा और तभी सब सरल होगा ।



'क, ख, ग...' बताया तो बोले : ''यह तो कठिन है, सरल बता दो ।'' तो कोई नयी वर्णमाला खोजनी पड़ेगी, नये आँकड़े बनाने पड़ेंगे... फिर वह भी उसे कठिन लगेगा । जब नया-नया होता है तो सरल भी कठिन लगता है और अभ्यास बढ़ जाता है तो कठिन 'कठिन' नहीं रहता, सब सरल हो जाता है । **'ईश्वरप्राप्ति का कोई सरल मार्ग बता दो ।' तो कोई नया कल्पित मार्ग सरल नहीं होता, जो मार्ग है सो है । जिस मार्ग से कइयों को मिला है, मिल रहा है और मिलता रहेगा वह ही मार्ग सरल है ।**

एक लड़का था, उसका नाम था शेरसिंह ।

किसीने बोला : ''अरे, तेरा शेरसिंह नाम है ?''

बोला : ''हाँ ! मैं शेरसिंह हूँ ।''

''शेरसिंह है तो शेर को तो पूँछ होती है, तेरे को पूँछ कहाँ है ? तेरे को पूँछ नहीं तो कम-से-कम अपने हाथ पर ही शेर छपवा के आ जा, गोदना गुदवा के आ जा ।''

वह गोदना गोदनेवाले के पास गया । गोदनेवाले ने ज्यों ही मशीन उठायी और सूई गड़ायी, त्यों ही 'एं-एं-एं !' करते हुए वह बोला : ''क्या कर रहे हो ?''

''शेर की पूँछ बना रहा हूँ ।''

''बिना पूँछ का शेर बना दो । पूँछ की क्या जरूरत है ? शेर की पूँछ तो पतली होती है, नहीं के बराबर... नहीं रहेगी तो क्या फर्क पड़ता है ?''

उसने फिर दूसरी जगह पर सूई रखी । तो वह लड़का फिर बोला : ''अरे ! क्या कर रहे हो... क्या कर रहे हो... ?''

''शेर की कमर बना रहा हूँ ।''

''शेर की तो पतली कमर होती है, नहीं के बराबर । जब पूँछ नहीं है तो कमर की क्या जरूरत है ? आप केवल शेर ही छाप दो ।''

फिर दूसरी जगह पर गोल बनाने जा रहा था तो लड़का बोला : ''क्या कर रहे हो... ?''

''शेर का मुख तो बनाने दे !''

''जब पूँछ नहीं, कमर नहीं तो मुख बनाने की क्या जरूरत है ? ऐसे ही शेर छाप दो ।''

गोदनेवाले ने अपना औजार रख दिया और (थोड़ी दूर खड़े युवक की ओर इशारा करते हुए) बोला : ''जा ! तू तो उसके जैसा है । उस युवक को किसीने पूछा था : ''ऐ ! →

किनका 'योगक्षेम वहन' करने में भगवान को मजा आता है ?

- पूज्य बापूजी

श्राद्ध में पहुँचे भगवान

अपने हृदय में भगवान के चिंतन को भर लो, गवान की स्तुति को भर लो, भगवान के प्रेम को र लो, इससे बड़ा लाभ होगा ।



ंत नरसिंह मेहता के यहाँ ाद्ध-दिवस था । उनके भाई ने ी श्राद्ध किया क्योंकि दोनों के पेता तो एक थे । ब्राह्मण देवता ो जाकर एक दिन पहले ोलना पड़ता है कि 'हमारे पिता या फलाने संबंधी) का श्राद्ध है, आप आना ।' ल श्राद्ध-अन्न खाना है तो ब्राह्मण ब्रह्मचर्य रखें, ंयमी रहें । नहीं तो ब्राह्मण को पाप लगता है, श्राद्धकर्ता के श्राद्ध में गड़बड़ी होती है । तो नरसिंह मेहता एक दिन पूर्व शाम को ब्राह्मण को आमंत्रण देने गये ।

ब्राह्मण ने कहा : ''तुम गरीब हो, तुम्हारे घर तो नहीं आऊँगा लेकिन तुम्हारे भाई जो श्राद्ध करेंगे तुम्हारे पिता का, मैं तो उधर जाऊँगा । उसका आमंत्रण मेरे पास है ।''

नरसिंह मेहता ने भगवान को कहा : ''प्रभु ! पुरोहित महाराज तो नहीं आयेंगे, अब तुम जानो, तुम्हारा काम जाने । कुछ

(कृपया पृष्ठ पलटें)

→ क्या नाम है ?''

बोला : ''शेरसिंह ।''

''कहाँ रहता है ?''

''शेरोंवाली गली में ।''

''तेरे बाप का नाम क्या है ?''

''शमशेर सिंह ।''

''तो इधर खड़ा क्यों है ?''

बोला : ''कुत्ता खड़ा है, डर लग रहा है ।''

''नाम शेरसिंह, बाप शमशेर सिंह, रहता शेरोंवाली गली में है और कुत्ते का पिल्ला खड़ा है उससे डर रहा है । तो काहे का तू शेरसिंह हुआ ?''

ऐसे ही तू शेर का गोदना गुदवा नहीं सकता तो बड़ा आया शेरसिंह !''

वैसे ही जो बोलता है कि 'सरल उपाय बता दो' तो तू भक्त काहे का ! मीरा कैसे लग गयी ! शांडिली कैसे लग गयी ! बालक ध्रुव, प्रह्लाद कैसे लग गये ! एकनाथजी, मिलारेपा, वीर शिवाजी, साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज कैसे लग गये और हम कैसे लग गये और पा लिया ! तो आप भी लग जाओ ! 'सरल उपाय बताओ, सरल उपाय बताओ...' जो ऐसा पूछता है समझो वह आत्मसाक्षात्कार करना ही नहीं चाहता ।

विद्यालय में लड़का गया, बोला : ''सरल उपाय बताओ ।''

बोले : ''भर्ती हो जाओ और अभ्यास करो ।''

बोला : ''नहीं, नहीं... सरल उपाय बता दो ।''

दूसरे विद्यालय में जाय, तीसरे विद्यालय में जाय... तो कौन-से सरल उपाय के विद्यालय में भर्ती होएगा ? पढ़ नहीं पायेगा । लग जाओ बस ! अपने-आप सब सरल होता जायेगा । टॉर्च का प्रकाश १० मीटर तक जाता है तो डरो मत ! चलो, १० मीटर तो क्या १० किलोमीटर भी चल जाओगे । ऐसे ही साधन करते-करते अपने-आप रस आता है, अपने-आप सब सरल होता जाता है । ❐

करना प्रभु !''

गरीब, दुःखी और भक्त व्यक्ति के पास भगवान की स्तुति और प्रार्थना का कितना बड़ा धन है, कितना बड़ा बल है ! अंदर से आवाज आयी : 'तू चिंता क्यों करता है ! तू मेरा है तो तेरा कर्म और तेरी चिंता क्या मेरी नहीं है ?' नरसिंह मेहता को अंतर में ठंडक आयी। वे दूसरे ब्राह्मणों को आमंत्रण देने गये। ब्राह्मणों को तो जलन थी कि 'जितना हो सके अपने को तो इस नरसिंह मेहता को नीचा दिखाना है !'



बोले : ''हाँ-हाँ, हम आयेंगे, हम आयेंगे... ।'' उनकी जातिवाले सभी बोले कि 'हम आयेंगे, तुम्हारे यहाँ श्राद्ध है तो हम आयेंगे।'

नागर समाज ने नरसिंह मेहता को नीचा दिखाने के लिए उनके यहाँ बिना बुलाये मेहमान बन के जाने का ठान लिया।

नरसिंह मेहता श्राद्ध के लिए घी, सीधा-सामान आदि लेने व्यापारी के पास गये।

व्यापारी ने कहा : ''मैं उधार तो दूँगा किंतु जरा भजन सुनाओ।''

नरसिंह मेहता भजन सुनाने लगे :

''अखिल ब्रह्मांडमां एक तुं श्रीहरि।
जूजवे रूपे अनंत भासे ॥...''

भजन में रस आने लगा तो एक के बाद एक भजन गाने लगे।

गाते-गाते नरसिंह मेहता को तो पता भी नहीं चला कि 'श्राद्ध करना है... घी चाहिए, मैदा, बेसन, चिरौंजी चाहिए, बादाम, काली मिर्च, इलायची आदि चाहिए।' सब भूल गये, 'मुझे तो तू चाहिए ! मैं तेरा, तू मेरा ! **अखिल ब्रह्मांडमां एक तुं श्रीहरि।...**'

हरि ने देखा कि 'ओ हो हो... (भक्त मेरे चिंतन में सब भूल गया है।)'

एक ब्राह्मण को भगवान ने अपनी कृपादृष्टि देकर उसमें विद्वत्ता भर दी। ब्राह्मण गये नरसिंह मेहता के पुरोहित बनकर। और भगवान ने स्वयं नरसिंह मेहता का रूप लेकर सीधे-सामान की बैलगाड़ी भर-भरा के भक्त के घर में रखी। नरसिंह मेहता का रूप लेकर आये भगवान श्राद्धकर्म में जो बनना चाहिए - सीरा, कढ़ी, खीर आदि खूब बनवाते गये। नागर ब्राह्मण पंचायत ने खूब खाया। देखा कि 'आहा ! अरे ! आज तो नरसिंह मेहता का रूप कुछ विशेष लग रहा है ! वाह भाई वाह ! हम तो इसको नीचा दिखाने के लिए आये थे लेकिन इसने तो क्या प्रेम से परोसा है ! और यह भोजन है कि अमृत है ! वाह भाई नरसिंह ! वाह !'

जो निंदा करते थे उनके भी मुँह से 'वाह नरसिंह मेहता ! वाह ! वाह नरसिंह मेहता ! वाह !' निकलने लगा और नरसिंह मेहता तो वहाँ कहें : 'वाह मेरे प्यारे ! वाह !' उनको खबर ही नहीं है कि मेरा कन्हैया वहाँ क्या कर रहा है !

ऐसा करते-करते नरसिंह मेहता के साथ व्यापारी भी भजन में तल्लीन हो गया। उसे भूख लगी तो कुछ याद आया, बोला : ''नरसिंह मेहता ! तुम तो सीधा-सामान लेने आये थे। तीन बज गये तीन ! ले जाओ अब।''

नरसिंह मेहता बोले : ''तीन बज गये ! मुझे तो पता ही नहीं। मैं तो सुबह आया था ! वहाँ सभी नागर ब्राह्मण बैठे होंगे, पुरोहित महाराज कोई आये होंगे, अच्छा लाओ भाई... !''

दुकानदार : ''क्या-क्या लेना है ?''

''मैं तो भूल गया क्या लेना था। (भावपूर्वक अंतर्यामी से पूछते हैं :) प्रभु ! आप ही बताओ ?''

प्रेरणा होती है कि 'सब ले लिया गया है,

ापस चल !'

नरसिंह मेहता : ''यह कौन कहता है ?''

अंदर से आवाज आयी : ''जिसका तू भजन ा रहा था ।''

बोले : ''वापस जाना है ?''

''अभी तीन बजे कोई सीधा लेना होता है... ले मानुष ! सब हो गया है, चल ।''

नरसिंह मेहता घर वापस आये । असली नरसिंह घर पहुँचे तो वे अंतर्यामी परमेश्वर जो नरसिंह मेहता का रूप लेकर आये थे अंतर्धान हो ाये ।

नरसिंह मेहता ने पत्नी से कहा : 'यह सब क्या है ?''

पत्नी : ''आपको कुछ हो गया है क्या ? ाड़ियाँ भर-भर के लाये, इतने लोगों को जिमाया और 'यह सब क्या है ?' - ऐसा पूछते हो ! आपको भूख लगी है, अच्छा आप जिमो ।''

''अरे ! मैं तो अभी आ रहा हूँ !''

''अरे छोड़ो बात, सुबह आप बैलगाड़ी भर-भर के सामान लाये, श्राद्ध हुआ और सब लोग खा-खा के आपकी प्रशंसा करके गये, आपने नहीं सुना ?''

''हाँ, लोग प्रशंसा तो कर रहे हैं पर जिसकी प्रशंसा हो रही है वह दिखता नहीं और जिसकी नहीं होनी चाहिए उसकी हो रही है ! जो सब कुछ करता है वह (ईश्वर) नहीं दिखता, जो कुछ नहीं करता वह शरीर ही दिखता है । मेरे प्रभु ! तू नहीं दिखता । हे मेरे कन्हैया ! हे मेरे साँवलिया ! तू धोखे में डालकर कहाँ गया रे... !''

''अरे ! अभी-अभी तुमको क्या हुआ ?''

''मुझे कुछ नहीं हुआ, वह धोखा दे के गया । मेरा रूप बना के आया था और सब कुछ कर-कराके गया ।''

नरसिंह मेहता को पहले से ही लोग पागल कहते हैं । पत्नी ने सोचा, 'इनका तो पागलपन बढ़ा !' बोली : ''अभी तो लोगों को जिमाया और अब कह रहे हैं वह गया, वह गया... लेकिन आप ही तो थे !''

नरसिंह मेहता ने पूरी घटना सुनायी और कहा : ''विश्वास न हो तो उस व्यापारी से पूछ । मैं तो अभी-अभी आया हूँ ।''

जो सब कुछ करता है वह नहीं दिखता, जो कुछ नहीं करता वह शरीर ही दिखता है ।

''अरे, आपको कुछ हो गया है ।''

''हाँ, बात सच्ची है और मुझे क्या, भगवान करें कि यह सारी दुनिया को हो !''

हम कितने भाग्यशाली हैं !

भगवान ने वचन दिया है :

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

(गीता : ९.२२)

जो अनन्य भाव से मेरा चिंतन करते हैं उनकी मैं व्यवस्था कर देता हूँ । और जब जिस वस्तु की, जिस व्यक्ति की, जिस सुख की, जिस दुःख की जरूरत पड़े उनके विकास के लिए, मैं उसका सर्जन कर देता हूँ । और उनका भार वहन करने में मेरे को मजा आता है ।

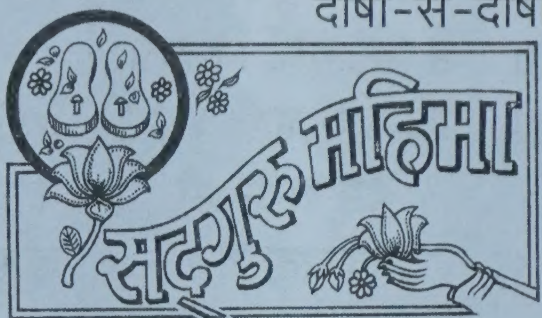
भगवान मजदूर होने में भी मजा लेते हैं, पशु होने में भी मजा लेते हैं, भक्त का सेवक 'घोड़ा' होने में भी भगवान को मजा आता है । ऐसा भगवान दुनिया में कहीं है तो वह भागवत धर्म* में है, सनातन धर्म में है ! जिसे आँखों से देख सकते हैं, हाथ से छू सकते हैं, छछियाभर छाछ पर नचा सकते हैं - यदि ऐसा कोई भगवान है दुनिया में, किसी मजहब में या धर्म में तो वह इस सनातन धर्म का भगवान है । हम कितने भाग्यशाली हैं ! (क्रमशः) ❐

★ सर्वत्र भगवद्-दर्शन, सम तत्त्व का दर्शन करते हुए ब्रह्मसाक्षात्कार की उपलब्धि करानेवाला पथ

गुरु-आश्रय से वक्र भी वंदनीय

(पिछले अंक में आपने गुरु-आश्रय की महिमा के बारे में पढ़ा कि गुरु-आश्रय वक्र को भी वंदनीय बना देता है । अब आगे...)

यदि कहते कि 'सद्गुरु को कृपा करने की क्या आवश्यकता है ? सद्गुरु को कृपा करके वक्र को वंदनीय बनाने की क्या आवश्यकता है ?' तो भाई ! **यह सद्गुरु का और ईश्वर का स्वभाव है कि वे अपने आश्रित मनुष्य के गुण और दोष का विचार नहीं करते हैं । वे अपने आश्रित जन को आश्रय देते हैं । उसकी रक्षा करते हैं ।**



शंकर ईश्वर हैं । शंकर गुरु हैं । ईश्वर और गुरु का यह सहज स्वभाव होता है कि वे अपने आश्रित जन के गुण-दोष का विचार नहीं करते हैं ।

भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने विभीषण-शरणागति के प्रसंग में कहा कि ''भले ही विभीषण दोषी है, फिर भी हम उसको ग्रहण करते हैं क्योंकि वह हमारी शरण में आया है ।

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू ।
आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥

'जिसे करोड़ों ब्राह्मणों की हत्या लगी हो, शरण में आने पर मैं उसे भी नहीं त्यागता ।'

(श्री रामचरित. सुं.कां. : ४३.१)

यद्यपि कोई दोषी हो तथापि शरणागत होने पर उसे अपनाना चाहिए । जब मनुष्य आश्रित हो जाता है तब उसके गुण और दोष का विचार नहीं किया जाता है ।

सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥

जो मनुष्य अपने अहित का अनुमान करके शरण में आये हुए का त्याग कर देते हैं, वे पामर (क्षुद्र) हैं, पापमय हैं; उन्हें देखने में भी हानि है (पाप लगता है) ।'' **(श्री रामचरित. सुं.कां. : ४३**

गुरुकृपा का आश्रय लो

गुरुकृपा अहैतुकी होती है, किसी आवश्यकत की पूर्ति के स्वार्थ को लेकर गुरु कृपा नह करते । भला गुरु को किस वस्तु-व्यक्ति क आवश्यकता-अपेक्षा है ? यह तो गुरु एवं ईश्व का सहज स्वभाव है कि शरणागत होने पर दोषी-से-दोषी व्यक्ति को भी अपना लेते हैं यदि दोषी को ग्रहण करना - अपनाना - आश्रय देना, गुरु क और ईश्वर का स्वभाव न हो तो पुण्यात्माओं के लिए तो उनकी मानो जरूरत ही न हो; वे तो अपने पुण्यकर्म से पार हो जायेंगे, उनको तो गुरु की कृपा की क्या जरूरत है ? लेकिन केवल अपने पुण्यकर्मों से कोई अज्ञान-समुद्र को पार नहीं करता । उसके लिए तो गुरुकृपा की अनिवार्य आवश्यकता है **निर्दोषं हि समं ब्रह्म...** केवल ब्रह्म ही निर्दोष है गुरु साक्षात् परब्रह्म-परमात्मा हैं । यदि तुम्हारी दृष्टि में एक भी निर्दोष तत्त्वज्ञ नहीं है तो तुम अपने जीवन में निर्दोष-निर्विकार होने की कल्पना भी मत करना । हाँ, यदि तुम अपने जीवन में निर्दोष होना चाहते हो, अवक्र होना चाहते हो, महान होना चाहते हो तो तुम गुरुकृपा का आश्रय लो । गुरुकृपा-आश्रय लेने में तुम्हारा लाभ-ही-लाभ है । गुरु अपने सहज-स्वभावानुसार अपनी कृपा-करुणा-अनुग्रह से अपने आश्रित जन के समस्त दोषों का निवारण करके उसे सर्वथा निर्दोष बना देते हैं । गुरु अपने आश्रित जन को उसकी समस्त वक्रताओं से विमुक्त करके उसे अपने ही समान वंदनीय गुरु बना देते हैं । यही तो गुरुकृपा-आश्रय का लाभ है कि शिष्य शिष्य नहीं रहता अपितु वंदनीय गुरु हो जाता है । ❑

स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने व स्वभाव पर विजय पाने का अवसर

- पूज्य बापूजी

एक होती है शारदीय नवरात्रि और दूसरी चैत्री नवरात्रि। एक नवरात्रि रावण के मरने के पहले शुरू होती है, दशहरे को रावण मरता है और नवरात्रि पूरी हो जाती है। दूसरी नवरात्रि चैत्र मास में रामजी के प्राकट्य के पहले, रामनवमी के पहले शुरू होती है और रामजी के प्राकट्य दिवस पर समाप्त होती है।

राम का आनंद पाना है और रावण की क्रूरता से बचना है तो आत्मराम का प्राकट्य करो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तथा **शरीर को 'मैं' और संसार को 'मेरा' मानना – यह रावण का रास्ता है। आत्मा को 'मैं' और सारे ब्रह्मांड को आत्मिक दृष्टि से 'मेरा' मानना – यह रामजी का रास्ता है।**

शारदीय नवरात्रि
७ से १४ अक्टूबर

उपवास की महत्ता क्यों है ?

नवरात्रि में व्रत-उपवास, ध्यान, जप और संयम-ब्रह्मचर्य... पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग रहें - यह बड़ा स्वास्थ्य-लाभ, बुद्धि-लाभ, पुण्य-लाभ देता है। परंतु इन दिनों में जो सम्भोग करते हैं उनको उसका दुष्फल भी हाथों-हाथ मिलता है। **नवरात्रि संयम का संदेश देनेवाली है। यह हमारे ऋषियों की दूरदर्शिता का सुंदर आयोजन है, जिससे हम दीर्घ जीवन जी सकते हैं और दीर्घ सूझबूझ के धनी होकर ऐसे पद पर पहुँच सकते हैं जहाँ इन्द्र का पद भी नन्हा लगे।**

नवरात्रि के उपवास स्वास्थ्य के लिए वरदान हैं। अन्न से शरीर में पृथ्वी-तत्त्व होता है और शरीर कई अनपचे और अनावश्यक तत्त्वों को लेकर बोझा ढो रहा होता है। मौका मिलने पर, ऋतु-परिवर्तन पर वे चीजें उभरती हैं और आपको रोग पकड़ता है। अतः इन दिनों में जो उपवास नहीं रखता और खा-खा... करता है वह थका-थका, बीमार-बीमार रहेगा, उसे बुखार-वुखार आदि बहुत होता है।

इस ढंग से उपवास देगा पूरा लाभ

शरीर में ६ महीने तक के जो विजातीय द्रव्य जमा हैं अथवा जो डबलरोटी, बिस्कुट या मावा आदि खाये और उनके छोटे-छोटे कण आँतों में फँसे हैं, जिनके कारण कभी डकारें, कभी पेट में गड़बड़, कभी कमर में गड़बड़, कभी ट्यूमर बनने का मसाला तैयार होता है, वह सारा मसाला उपवास से चट हो जायेगा। तो नवरात्रियों में उपवास का फायदा उठायें।

नवरात्रि के उपवास करें तो पहले अन्न छोड़ दें और २ दिन तक सब्जियों पर रहें, जिससे जठर पृथ्वी-तत्त्व संबंधी रोग स्वाहा कर ले। फिर २ दिन फल पर रहें। सब्जियाँ जल-तत्त्व प्रधान होती हैं और फल अग्नि-तत्त्व प्रधान होता है। फिर फल पर भी थोड़ा कम रहकर वायु पर अथवा जल पर रहें तो और अच्छा लेकिन यह मोटे लोगों के लिए है। पतले-दुबले लोग किशमिश, द्राक्ष आदि थोड़ा खाया करें और इन दिनों में गुनगुना पानी हलका-फुलका (थोड़ी मात्रा में) पियें। ठंडा पानी पियेंगे तो जठराग्नि मंद हो जायेगी।

अगर मधुमेह (diabetes), कमजोरी, बुढ़ापा नहीं है, उपवास कर सकते हो तो कर लेना। ९ दिन के नवरात्रि के उपवास नहीं रख सकते तो कम-से-कम सप्तमी, अष्टमी और नवमी का उपवास तो रखना ही चाहिए।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

सर्व दुःखों की निवृत्ति व परमानंद की प्राप्ति कैसे हो ?

– पूज्य बापूजी

आत्मसाक्षात्कार का अर्थ क्या होता है ? कि **सब दुःखों से सदा के लिए मुक्ति और परमानंद की प्राप्ति**। जिससे बढ़कर कोई आनंद नहीं, कोई ऊँचाई नहीं उसकी प्राप्ति को बोलते हैं आत्मसाक्षात्कार !

तो क्या इस उपलब्धि के बाद भूख नहीं लगेगी ? बुखार नहीं आयेगा ?

भूख या बुखार मिटाना आत्मानुभव का फल नहीं है, 'भूख मुझे लगी है, बुखार मुझे आया है, मैं बूढ़ा हो गया हूँ, वाहवाही या निंदा मेरी होती है...' इस प्रकार का अज्ञान मिटाने का नाम है आत्मानुभव। तुम आत्मसाक्षात्कार कर लो फिर भी शरीर के प्रारब्ध से, वातावरण से यह-वह... बाहर का प्रभाव होगा। अज्ञानी, जिसको ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई उसको और जिनको ईश्वर की प्राप्ति हुई है उन ज्ञानी को, दोनों को बाहर का प्रभाव तो बराबर होगा परंतु साधारण व्यक्ति बाहर के प्रभाव में बह जायेगा और ज्ञानी समझेंगे कि 'यह शरीर को हुआ, मन को हुआ...' अपने स्वरूप में उनको दुःख नहीं होता।

खिन्नोऽपि न च खिद्यते।

वे खिन्न होते हुए भी हृदय में शांत रह सकते हैं। क्रोध करते हुए भी पूर्ण शांति में विराजते हैं।

'हाय हाय ! मेरा बेटा मर गया, अब मेरा जीना मुश्किल है !' ऐसा करके वसिष्ठजी गंगा-किनारे आत्महत्या★ करने जा रहे हैं, ज्यों कूदे त्यों गंगाजी का जल-स्तर नीचे हो गया फिर आगे चले और पत्थर बाँध के कूदने गये तो गंगाजी प्रकट हो गयीं।

पूज्य बापूजी का ५८वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : ७ अक्टूबर

बोलीं : ''महाराज ! आप जैसे आत्मसाक्षात्कारी, ज्ञानी पुरुष अगर पुत्र-शोक में आकर आत्महत्या करेंगे तो मुझे पाप लगेगा। आपके चरणों में तो हम तीर्थ मनुष्य का रूप लेकर सत्संग सुनने को आते हैं। अब आप आत्महत्या कर रहे हैं तो...''

व्यक्ति अगर संयमी है, उसमें वैराग्य है और सद्गुरु की आज्ञा में चलता है तो ज्ञान मार्ग एकदम विहंगम मार्ग है।

वसिष्ठजी बोले : ''अरे बच्ची ! तू क्या मेरे को उपदेश देती है ! मैं आत्महत्या करता हूँ ? आत्महत्या का भाव चित्त में आया, चित्त प्रकृति का है, मैं तो करोड़ों शरीरों में हूँ। मैं क्यों मरूँगा ?''

लो ! कैसी समझ है !

अष्टावक्र गीता (१४.४) में ऐसे महापुरुषों के लिए आता है :

अन्तर्विकल्पशून्यस्य बहिः स्वच्छन्दचारिणः।
भ्रान्तस्येव दशास्तास्तास्तादृशा एव जानते॥

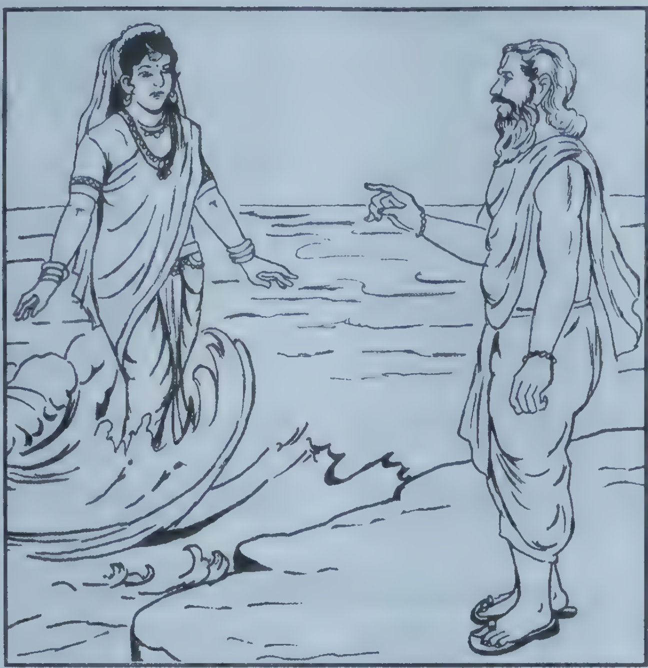
'जो भीतर से तो विकल्प-शून्य है और बाहर से भ्रांत-पुरुष के समान स्वच्छंद आचरण करता है, उसकी उन-उन अनिर्वचनीय अवस्थाओं को वैसे लोग (ब्रह्मवेत्ता महापुरुष) ही जानते हैं।'

आत्मज्ञानी तुरीय अवस्था में पहुँच जाते हैं

जिन्होंने अपने को ज़ान लिया है वे कभी देह

★ ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के लिए तो सारा व्यवहार विनोदमात्र है किंतु जो तन-मन को मैं-मेरा मानकर प्रकृति के राज्य में जीते हैं उनके लिए तो आत्महत्या महापाप है।

से एकाकार होकर सामान्य जनों की नाईं व्यवहार करते भी हैं तो भी फिर तुरंत अपने आत्मा में चले आते हैं। जिन्होंने नहीं जाना है वे कहाँ जायेंगे ? घूम-फिर के देह में ही तो आयेंगे ! या तो सत्त्वगुण में आयेंगे या तो रजोगुण में आयेंगे या तो तमोगुण में आयेंगे - बस ३ ही जगहें हैं उनके लिए । आत्मज्ञानी की चौथी अवस्था है - तुरीय अवस्था ।



यह अभी जाग्रत अवस्था है, फिर रात को स्वप्न अवस्था होती है, गहरी नींद सुषुप्ति होती है । सुषुप्ति के बाद फिर जाग्रत अवस्था होती है लेकिन आत्मज्ञानी तुरीय अवस्था में पहुँच जाते हैं ।

यत्स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यं
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसङ्घः ॥

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि आते हैं, चले जाते हैं परंतु जो उन सबमें रहता है वही अमर आत्मा है, ज्ञानस्वरूप है, उसका कभी जन्म नहीं होता इसलिए उसकी मृत्यु भी नहीं है । वृत्ति-ज्ञान उत्पन्न होता है, नष्ट होता है परंतु शुद्ध ज्ञान जो है - आत्मा, वह ज्यों-का-त्यों रहता है । इतना सरल है !

आत्मसाक्षात्कार २ प्रकार से

सम समुच्चय और क्रम समुच्चय... क्रम से अंतःकरण की शुद्धि, यह-वह आदि साधन करके आत्मसाक्षात्कार करना यह क्रम समुच्चय है और कोई तत्त्वज्ञानी महापुरुष मिल गये, उनके सत्संग-सान्निध्य में आते-आते सब साधनों का अभ्यास एक साथ करते हुए आत्मसाक्षात्कार को उपलब्ध हो जाना - यह सम समुच्चय है । ऐसा शास्त्रों में है और ऐसे कुछ दृष्टांत भी हैं । अष्टावक्रजी को, वामदेवजी को माता के गर्भ में आत्मानुभव हो गया था लेकिन उन्होंने पूर्वजन्म में न जाने कितना साधन किया था !

परमात्मप्राप्ति के ३ मार्ग

परमात्मप्राप्ति के ३ मार्ग बताये गये हैं : भक्ति मार्ग, योग मार्ग और ज्ञान मार्ग ।

(१) भक्ति मार्ग : यह मार्ग सुरक्षित तो है पर बहुत लम्बा है ।

(२) योग मार्ग : इसमें विभूतियाँ आती हैं, सत्यसंकल्प-सामर्थ्य आता है, शक्तियाँ आती हैं । इनसे व्यक्ति की वाहवाही होती है, फिर वह उसी वाहवाही में खप जाता है, कच्चा रह जाता है ।

(३) ज्ञान मार्ग : व्यक्ति अगर संयमी है, उसमें वैराग्य है और सद्गुरु की आज्ञा में चलता है तो ज्ञान मार्ग एकदम विहंगम मार्ग है ।

भक्ति मार्ग - जैसे चींटी है तो एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाने के लिए पहले पेड़ से कब उतरेगी, कब दूसरे पेड़ पर पहुँचेगी ! योग मार्ग है - बंदर की नाईं छलाँग मार दी । पर ज्ञान मार्ग है गरुड़ की नाईं, बस !

ज्ञान मार्ग में सावधानी

जितना तीव्र साधन है उतनी सावधानी की जरूरत है । चलते-चलते गिर गये तो ज्यादा चोट नहीं लगती, साइकिल से गिर गये तो ज्यादा चोट और मोटरसाइकिल से गिरे तो और ज्यादा एवं हवाई जहाज से गिरे तो हड्डियाँ भी खोजना मुश्किल हो जायेगा ।

तो ऐसा है ज्ञान मार्ग ! इसमें बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है । संयम, नियम, सद्गुरु की

देखरेख जरूरी है, नहीं तो मन वासना की ढाल बनाकर बोलेगा कि 'सब ब्रह्म है, सब परमात्मा है... तो जरा सुलफा फूँक लिया तो क्या है, जरा तम्बाकू खा लिया तो क्या है !...' ऐसा करते-करते घर का रहा न घाट का...

कुछ श्रद्धा कुछ दुष्टता, कुछ संशय कुछ ज्ञान।
घर का रहा न घाट का, ज्यों धोबी का श्वान॥

आत्मसाक्षात्कार के पूर्व तीन सोपान

अब प्रश्न उठता है कि आत्मसाक्षात्कार कैसे करें ?

इसके पूर्व तीन सोपान हैं : श्रवण, मनन और निदिध्यासन।

ब्रह्मवेत्ता संतों का उपदेश सुनना 'श्रवण' है। यह आत्मसाक्षात्कार का प्रथम सोपान है। शास्त्रों तथा ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के सत्संग के साहित्य का पठन भी एक प्रकार से श्रवण ही है। पठन एवं श्रवण किये हुए सत्संग का नित्य मनन करते रहना यह द्वितीय सोपान है। **ब्राह्ममुहूर्त में उठकर, एकांत में बैठ के ब्रह्मज्ञानी गुरु के द्वारा निर्दिष्ट युक्तियों से ब्रह्मज्ञान के उपदेश का निरंतर मनन करते रहना चाहिए। मनन के सतत अभ्यास से साधक तीसरे सोपान निदिध्यासन में पहुँच जाता है।**

इन तीनों सोपानों के पथप्रदर्शक भगवत्प्राप्त ज्ञानी महापुरुष की शरण ले लें तो मार्ग एकदम सरल हो जाता है। आत्मसाक्षात्कार की गुरुचाबी (master key) केवल ब्रह्मज्ञानी गुरु के पास ही होती है। ❐

ऐसी महान विभूति के हम कर्जदार हैं

पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग

सूरत आश्रम में सेवारत शिवाजी भाई आद्रा, जिन्हें सन् १९९२ से पूज्य बापूजी का सत्संग-सान्निध्य प्राप्त होता रहा है तथा जो सन् १९९६ से ऋषि प्रसाद की सेवा का लाभ ले रहे हैं, वे अपने जीवन के अनुभवकोश में से कुछ प्रसंग हमसे साझा करते हुए बताते हैं :

ऋषि प्रसाद ने जोड़ी पूज्य बापूजी से डोरी

मैं कक्षा १२वीं में पढ़ता था। मुझे साधु-संतों के प्रति श्रद्धा नहीं थी। हमारे घर में ऋषि प्रसाद आती तो थी लेकिन मैं पढ़ता नहीं था। एक बार परीक्षा में पेपर ठीक नहीं जाने से मन बहुत अशांत था। क्या किया जाय कुछ समझ में नहीं आ रहा था। टेबल पर ऋषि प्रसाद रखी थी तो मैं उसे उलटने-पलटने लगा। कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं तो मुझे बड़ी अच्छी लगीं। मैं पढ़ता गया और मेरी हताशा-निराशा दूर होती गयी, हृदय में शांति आने लगी। उसके बाद तो ऋषि प्रसाद पढ़ने का ऐसा चस्का लग गया कि फिर पढ़े बिना रहा ही नहीं जाता था।

एक बार मैं बुरी तरह से बीमार पड़ गया। मुझे श्वास लेने में बहुत तकलीफ होने लगी। खाना-पीना मुश्किल हो गया। काफी इलाज के बाद भी मेरे स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो रहा था।

एक रात को मैं ऋषि प्रसाद के मुखपृष्ठ पर छपे बापूजी के श्रीचित्र को देखते-देखते सो गया। सपने में पूज्यश्री आये और मेरी बीमारी को वैसे ही हाथ से मिटा दिया जैसे कोई सूखे तिनके को हाथ से हटा देता है। सुबह उठा तो जाग्रत में भी बीमारी गायब थी ! मैंने ऋषि प्रसाद को माथे से लगाकर प्रणाम किया और उसी दिन ठान लिया कि 'मुझे पूज्य बापूजी से दीक्षा लेनी है, उनका सत्संग-सान्निध्य पाना है।'

सपने में पूज्यश्री ने मुस्कराते हुए मुझे कुछ

ऐसे सांत्वनाप्रद श्रीवचन कहे थे जो आज भी मेरे हृदयपटल पर अंकित हैं। वे मंत्रमय श्रीवचन नाजुक क्षणों में मुझे सँभालते हैं, कठिन डगर पर मुझे बल देते हैं तथा जीवन-लक्ष्य को हासिल करने के लिए मुझे आगे बढ़ाते हैं।

अद्‌भुत योग-सामर्थ्य का अलौकिक दृश्य

सन् १९९२ की बात है। मैं पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के लिए अहमदाबाद आश्रम के सत्संग-भवन में बैठा था। व्यासपीठ पर विराजमान पूज्यश्री 'हरि ॐ...' का गुंजन करवाते हुए सबके ऊपर दृष्टिपात कर रहे थे, तब मैंने इन्हीं आँखों से देखा कि बापूजी की दिव्य आभा (aura) निकलकर पूरे पंडाल में बैठे लोगों के ऊपर छा रही है। जैसे सूर्योदय होते ही सूर्य की उज्ज्वल रश्मियों की तेजपूर्ण आभा से सम्पूर्ण भूमंडल प्रकाशित हो जाता है, वैसे ही पूज्यश्री की दिव्य आभा सब ओर छाते हुए दीक्षार्थियों के हृदय को प्रफुल्लित कर रही थी। पूज्यश्री जब मंत्र देने लगे तो मुझे उन मंत्रों में से तीन मंत्रों के अधिष्ठाता देव व्यासपीठ की दायीं ओर एवं तीन मंत्रों के अधिष्ठाता देव बायीं ओर मंत्र के साथ दिखने लगे। पूज्यश्री एक-एक मंत्र का उच्चारण करते जा रहे थे और जिनको जो मंत्र लेना होता था वे लोग उस मंत्र के उच्चारण के समय अपना हाथ खड़ा करते जा रहे थे। मंत्रों से सफेद किरणें निकलकर हाथ खड़े किये हुए लोगों के भीतर प्रवेश करती जा रही थीं और फिर देखते-ही-देखते सारे मंत्र पूज्य बापूजी में समा गये। मैं पूज्यश्री के इस अद्‌भुत योग-सामर्थ्य को देखकर आश्चर्य के सागर में गोता लगाने लगा। उस अलौकिक दृश्य का वर्णन करना असम्भव है।

''वे कम-से-कम पिछले लगातार दस जन्मों से समाजसेवा का यह पुनीत कार्य करते आ रहे हैं। मुझे पिछले दस जन्मों तक का ही पता चल पाया, उसके पहले का पढ़ने की क्षमता मशीन में नहीं थी।''

इस घटना के कुछ वर्षों के बाद विश्वप्रसिद्ध आभा (aura) विशेषज्ञ डॉ. हीरा तापड़िया ने किर्लियन फोटोग्राफी से पूज्य बापूजी का आभा-चित्र खींचा तो वे भी आश्चर्यचकित हो गये! उन्होंने अपना अनुभव व्यक्त करते हुए बताया कि ''मैंने अब तक लगभग सात लाख से भी ज्यादा लोगों के आभा-चित्र लिये हैं, जिनमें एक हजार विशिष्ट व्यक्ति शामिल हैं, जैसे - बड़े संत, साध्वियाँ, प्रमुख व्यक्ति आदि। आज तक जितने भी लोगों की आभाएँ मैंने ली हैं, उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं उन्नत आभा संत श्री आशारामजी बापू की पायी। बापू की आभा में बैंगनी रंग है, जो यह दर्शाता है कि बापूजी आध्यात्मिकता के शिरोमणि हैं। यह सिद्ध ऋषि-मुनियों में ही पाया जाता है।

बापू की आभा में यह प्रमुखता मैंने पायी कि वे सम्पर्क में आये व्यक्ति की ऋणात्मक ऊर्जा को ध्वस्त कर धनात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं। बापू की आभा देखकर मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य हुआ क्योंकि वे कम-से-कम पिछले लगातार दस जन्मों से समाजसेवा का यह पुनीत कार्य करते आ रहे हैं - लोगों पर शक्तिपात करके उन्हें अध्यात्म में लगाना, स्वस्थ करना, समाज की बुराइयों को दूर करना, ज्ञानामृत बाँटना, आनंद बरसाना आदि। मुझे पिछले दस जन्मों तक का ही पता चल पाया, उसके पहले का पढ़ने की क्षमता मशीन में नहीं थी।'' (डॉ. हीरा तापड़िया का विडियो देखने हेतु लिंक : https://goo.gl/0oeHP5)

ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का सामर्थ्य, उनकी करुणा-कृपा अनंत और अगोचर होती है, भला उसे हमारी इन्द्रियों व मशीनों द्वारा कैसे मापा जा सकता है !

जीवन-पथ पर रस्साकशी

दीक्षा के बाद मुझे ऋषि प्रसाद की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, मानो अपने लक्ष्य की ओर तीव्रता से चलने का एक सुंदर साधन मिल गया। ऋषि प्रसाद को घर-घर पहुँचाना, गाँव-गाँव जाकर ऋषि प्रसाद की सदस्यता का अभियान करना मुझे बहुत अच्छा लगता था। साधना-सेवा बढ़ती गयी और व्यर्थ का घूमना-फिरना, अनावश्यक खान-पान - इन सबसे मन उपराम होने लगा। घरवाले नौकरी-व्यवसाय व शादी करने के लिए मुझे बोलते रहते थे। मेरे मन में हुआ कि 'मेरी आगे की यात्रा आश्रम में ही ठीक तरह से हो सकती है।' मैंने अपने हृदय की बात घरवालों के सामने रखी तो उन्होंने आश्रम में रहने के लिए स्पष्टरूप से मना कर दिया।

घरवाले नौकरी-व्यवसाय व शादी करने के लिए मुझे बोलते रहते थे। ऐसे समय में प्रार्थना से मुझे बड़ा बल मिलता था और फिसलने से बचकर मैं फिर से अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ता।

एक ओर जहाँ घरवालों, मित्रों, रिश्तेदारों की टोकाटाकी लगी रहती थी तो दूसरी ओर मेरा मन भी कभी-कभी जागतिक आकर्षणों की ओर खिंचने लगता था, जिससे ईश्वरप्राप्ति के पथ पर चलने में मेरे पैर डगमगाने लगते थे। ऐसे समय में मैं पूज्य बापूजी से प्रार्थना करता था कि 'गुरुदेव ! अब आप ही कोई रास्ता दिखाइये। आप ही मुझे अपनी शरण में लीजिये।'

प्रार्थना से मुझे बड़ा बल मिलता था और फिसलने से बचकर मैं फिर से अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ता। आश्रम में रहने का मेरा संकल्प पूरा होना यह भी मेरे जीवन में घटित गुरुकृपा का एक चमत्कार ही था।

वह चमत्कार, जिसने पहुँचाया गुरुद्वार

एक बार मेरे पिताजी पूज्यश्री के सत्संग-दर्शन के निमित्त सुमेरपुर (राज.) गये थे। पिताजी जब गुरुदेव के दर्शन करने के लिए खड़े थे तो बापूजी ने मुस्कराते हुए उन्हें पास बुलाया और प्रसाद देते हुए कहा : ''यह लो प्रसाद। जाओ, मौज करो।''

पिताजी ने घर आकर हम सबको प्रसाद दिया और स्वयं भी खाया। पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग का, पावन करकमलों से स्पर्शित प्रसाद का ऐसा प्रभाव हुआ कि मेरे पिताजी के विचारों में परिवर्तन हो गया। जैसे भगवान श्रीकृष्ण के वचनामृत व कृपा-प्रसाद से अर्जुन का कौटुम्बिक मोह, विषाद दूर हुआ और वे अपने कर्तव्य में लग गये, वैसे ही मेरे पिताजी के हृदय पर मेरे प्रति छाया मोह का बादल छँट गया और उन्होंने खुशी से मुझे आश्रम में समर्पित होने की स्वीकृति दे दी।

गुरुदेव के उस प्रसाद से ईश्वर की राह पर चलने की मेरी दृढ़ता भी बढ़ गयी और २-३ दिन के बाद ही मैं समर्पित होने हेतु अहमदाबाद आश्रम पहुँच गया। पूज्यश्री व्यासपीठ पर विराजमान थे। मैं दर्शन के लिए निकट गया तो गुरुदेव ने मुझे प्रेमभरी दृष्टि से निहारा और निकट बुलाकर परिचय आदि पूछा। फिर मुझे खूब प्रसादी देते हुए बोले : ''जाओ, अब सेवा में लग जाओ।''

पूज्य बापूजी की पावन, मधुमय दृष्टि व प्रेम पाकर मुझे अभूतपूर्व शांति का अनुभव हुआ।

(क्रमशः) ❒

सेवा खोल देती है सफलता का राजमार्ग

- पूज्य बापूजी

वे ही लोग संसार में विफल होते हैं जो ज्यादा स्वार्थी होते हैं, जिन्होंने दूसरों की भलाई की नहीं। ऐसा नहीं कि डिग्री नहीं है तो विफल हैं। डिग्री के अभाव का विफलता से कोई लेना-देना नहीं। आप तन से, मन से, मति से अगर दूसरे के कष्ट-निवारण में लगते हैं, दूसरे के काम आने लगते हैं तो डिग्री न होने पर भी विफल होने का सवाल ही नहीं है। अगर अक्ल-होशियारी से, डिग्री से दूसरे का शोषण करके सुखी होना चाहते हैं, झूठ-कपट करके सुखी होना चाहते हैं तो डिग्री होने पर भी विफल होना स्वाभाविक है। प्रकृति का नियम है - जो देता है वह पाता है। जो अपने लिए ही सोचता है वह सब खोता है। ये फूल सुगंधित और पीले-पीले क्यों हैं ? कि पीला रंग इन्होंने लौटाया है, दिया है तो पीला ही रंग इनके पास रह गया।

गुलाब गुलाबी क्यों है ? कि सप्तरंगों में से गुलाबी रंग परावर्तित किया है, दिया है तो गुलाबी उसके पास रह गया। आप जो देते हैं वही आपके पास रह जाता है और जो रखते हैं वह व्यर्थ हो जाता है। डॉक्टर की डॉक्टरी को धिक्कार है अगर मरीजों की सेवा में नहीं लगती है। मास्टर की मास्टरी को धिक्कार है अगर विद्यार्थियों की पढ़ाई में ईमानदारी से नहीं लगती है। इंजीनियर की इंजीनियरिंग को धिक्कार है अगर लोगों के काम नहीं आती। आपके पास जो योग्यता है वह आपने अकेले ने ही नहीं बनायी है। आपके विद्वान होने में कॉपी, पेन, मेज (desk) बनानेवाले और विद्यालय की इमारत बनानेवाले का भी सहयोग है। कइयों के सहयोग से आप स्नातक (graduate) हुए हैं या पढ़े-लिखे हैं। जो भी आपके पास सूझबूझ है उसमें कइयों का योगदान है तो यदि आपकी सूझबूझ और योग्यता कइयों के काम नहीं आती तो उस सूझबूझ व योग्यता को धिक्कार है ! धिक्कार है !!

जो विफल होते हैं वे सेवा खोज लें। विफलता को भगाना है तो परहित का काम करो, सेवा में लग जाओ।

सेवा से ही सेवा फलेगी। बिना सेवा के किसीका विकास हुआ हो ऐसा आज तक हमने देखा-सुना नहीं। जिसको भी सफल होना हो वह उसके पास जो योग्यता है उसे दूसरों के काम में लगा दे और उसका ढिंढोरा न पीटे। 'मैंने यह सेवा की... मैंने दो अनुष्ठान किये, मैंने फलाना किया...।' ऐसी रट न लगाये। जो भी करते हो ईश्वर की प्रसन्नता के लिए करो, अंतर्यामी परमात्मा देख रहा है।

नेकी कर कुएँ में डाल। ❑

(पृष्ठ ११ से 'स्वास्थ्य को सुदृढ़...' का शेष)

विजय का डंका बजाओ !

५ ज्ञानेन्द्रियाँ (जीभ, आँख, कान, नासिका व त्वचा) और ४ अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार) - ये तुम्हें उलझाते हैं। इन नवों को जीतकर तुम यदि नवरात्रि मना लेते हो तो नवरात्रि का फल विजयादशमी होता है... जैसे रामजी ने रावण को जीता, महिषासुर को माँ दुर्गा ने जीता और विजय का डंका बजाया ऐसे ही तुम्हारे चित्त में छुपी हुई आसुरी सम्पदा को, धारणाओं को जीतकर जब तुम परमात्मा को पाओगे तो तुम्हारी भी विजय तुम्हारे सामने प्रकट हो जायेगी। ❑



विद्यार्थी संस्कार



जीवन-विकास का मूल है व्रत

- पूज्य बापूजी

(महात्मा गांधी जयंती : २ अक्टूबर)

जिसके जीवन में कोई व्रत नहीं उसका जीवन विकास नहीं कर सकता है । कोई-न-कोई मंगलमय व्रत ले लो । जीवन में व्रत विकास का मूल है । महामना बनने का व्रत लो - 'फरियाद नहीं करेंगे, बुराई नहीं देखेंगे - भलाई देखेंगे ।' प्रसन्न रहने का व्रत लो । पूनम का व्रत लो, एकादशी का व्रत लो । ३६ साल की उम्र में पत्नी के साथ रहते हुए भी मोहनदास गांधी ने ब्रह्मचर्य-व्रत ले लिया । उनके जीवन में और भी कई व्रत थे । इतने दिन भोजन बिना नमक का खाना इस व्रत ने उनके बेटे मणिलाल को भी व्रती बना दिया ।



गांधीजी ने आश्रम में अलोना भोजन का नियम शुरू किया - एक महीने के लिए बिना नमक का भोजन होगा । उनका बेटा मणिलाल बिना नमक का भोजन खा-खा के ऊब गया था । गांधीजी के पास कुछ अंग्रेज मेहमान आये तो गांधीजी ने कहा : ''नमक, मिर्च-मसाले आदि डालकर जैसी खिचड़ी बनती है, मेहमानों के लिए वैसी बनाओ । आश्रमवासियों के लिए जो खिचड़ी बनती है, वही बनेगी ।''

अब क्या हुआ कि गांधीजी का बेटा मणिलाल जहाँ आश्रमवासियों की खिचड़ी थी वहाँ नहीं गया, जहाँ मेहमानों के लिए खिचड़ी बनी थी उधर जा के थाली धर दी ।

आश्रमवासियों ने मणिलाल से कहा : ''अपन तो आश्रमवासी हैं । बिना नमक के भोजन का अपना नियम है, यह तो मेहमानों का भोजन है ।''

मणिलाल बोला : ''मुझे पता है लेकिन एक महीने बिना नमक के भोजन का व्रत है तो आज नमकवाली खिचड़ी खा लेता हूँ फिर एक दिन बढ़ा दूँगा ।''

परंतु परोसनेवाले की हिम्मत नहीं हुई गांधीजी से पूछे बिना उसको खिचड़ी देने की । उसने कहा : ''ठहरो, मैं पूछ के आता हूँ ।''

गांधीजी आ गये परोसनेवाले की जगह पर और बेटे को खिचड़ी तो परोस दी किंतु बेटा खिचड़ी की थाली उठाकर ले जाय उसके पहले गांधीजी ने अपना कान पकड़ के अपने को थप्पड़ मारे कि 'जरूर मैं भी व्रत-त्यागी रहा होऊँगा, जीभ का गुलाम रहा होऊँगा इसलिए मेरा बेटा इतना नालायक हो गया कि जरा-सा नमक भी नहीं छोड़ सकता है । एक दिन तो पूरा शरीर छोड़ना पड़ेगा, पूरे रिश्ते-नाते छोड़ने पड़ेंगे । यह एक छोटी-सी चीज छोड़ने के नियम में फिसल रहा है तो जरूर मेरी कमजोरी होगी ।'

अब उनका बेटा नमकवाली खिचड़ी क्या खायेगा ! चरणों में गिर पड़ा : ''नहीं-नहीं पिताजी ! आपका कसूर नहीं, मेरी लोलुपता है । →

प्रेरक पंक्तियाँ

बुलंद हो हौसला

बुलंद हो हौसला तो मुट्ठी में हर मुकाम★ है,
मुश्किलें और मुसीबतें तो जिंदगी में आम है,
जिंदा हो अतः ताकत रखो
लहरों के खिलाफ तैरने की,
लहरों के साथ बहना तो लाशों का काम है ।

★ मंजिल

किनको भगवान जल्दी मिलते हैं ?

- पूज्य बापूजी

भगवान उसको जल्दी मिलते हैं -

(१) जो बलवान होते हुए भी क्षमावान है ।

(२) जो गरीब होते हुए भी सत्कर्म और दान करता है ।

(३) जो बाल्यकाल से ही भगवान का भजन करता है ।

(४) जो सद्गुरु का सत्संग-सान्निध्य लेता है ।

ऐसा नहीं देखा जाता

अब्रुवन् कस्यचिन्निन्दामात्मपूजामवर्णयन् ।
न कश्चिद् गुणसम्पन्नः प्रकाशो भुवि दृश्यते ॥

'किसी दूसरे की निंदा न करे, अपनी मान-प्रतिष्ठा की प्रशंसा न करे । कोई भी गुणवान पुरुष परनिंदा और आत्मप्रशंसा का त्याग किये बिना इस भूमंडल में सम्मानित हुआ हो यह नहीं देखा जाता है ।' **(महाभारत, वन पर्व : २०७.५०)**

→ आप अपने को थप्पड़ नहीं मारिये ।''

ऐसे पुरुष ही बापू बनते हैं, महापुरुष बनते हैं । अपने ऊपर नियंत्रण हो, अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण हो, मन पर नियंत्रण हो । ❐

ऐसा चिंतन करे बुद्धि का विकास !

- पूज्य बापूजी

अपने मन पर लगाम तो होनी चाहिए न ! गाड़ी कितनी भी अच्छी हो परंतु उसमें यदि ब्रेक और स्टीयरिंग नहीं हैं तो वह गिरा देगी तुम्हारे को । अतः संयम भी होना चाहिए ।

सुबह नींद में से उठें तो थोड़ी देर चुप बैठें । फिर ऐसा चिंतन करें : 'आज मैं कभी भी फरियाद का चिंतन नहीं करूँगा, अपने मन को दृढ़ रखूँगा क्योंकि मेरे मन की गहराई में मेरे भगवान हैं । भगवान सदा एकरस हैं, दृढ़ हैं तो मन दृढ़ होगा तो उसमें भगवान की सत्ता आयेगी । मेरी बुद्धि को दृढ़ करूँगा, बुरी संगति नहीं करूँगा, बुरे विचारों में नहीं गिरूँगा । मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं । प्रभु ! आप मेरे हैं न ! आप चेतनस्वरूप हैं, ज्ञानस्वरूप हैं, आनंदस्वरूप हैं, आप शांत आत्मा हैं ।' इस प्रकार का चिंतन करने से बुद्धि बढ़ेगी । 'क्या करूँ, कैसे करूँ, मेरा ऐसा हो गया है...' ऐसी चिंता करेगा तो बुद्धिनाश होगा ।... फिर जो पढ़ा है अथवा जो पढ़ना है उसका थोड़ा चिंतन करो । **चिंतन से बुद्धि का विकास होता है और चिंता से बुद्धि का विनाश होता है ।** सूर्यनारायण को अर्घ्य देना, भगवन्नाम का जप करना, भगवान को एकटक देखते-देखते फिर उनको आज्ञाचक्र में देखना । इनसे बुद्धि का विकास होता है । ❐

उन्नतिकारक कुंजियाँ

- पूज्य बापूजी

❋ हलका भोजन करने से शरीर में स्थूलता कम होती है, मन भी सूक्ष्म होता है । सूक्ष्म मन प्रसन्नता का द्योतक है ।

❋ भृकुटी में तिलक करने से ज्ञानशक्ति का विकास होता है ।

...तो परमात्मा स्वयं बेपरदा होने को राजी हो जाते हैं

- पूज्य बापूजी

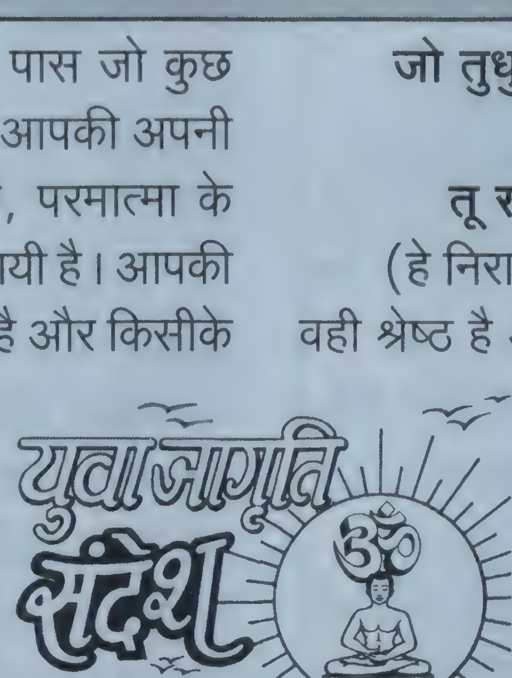
यह पक्का कर लें कि हमारे पास जो कुछ योग्यता है वह किसीकी दी हुई है, आपकी अपनी नहीं है । प्रकृति के द्वारा आयी है, परमात्मा के द्वारा आयी है, वातावरण के द्वारा आयी है । आपकी जो योग्यता है वह किसीकी दी हुई है और किसीके लिए दी हुई है । वह ईश्वर की प्रसन्नतार्थ संसार की सेवा में लगाने के लिए दी हुई है । जब ईश्वर की दी हुई चीज अपनी मानकर लगाते हो तो फिर नश्वर चीजें मिलती हैं । योग्यता को अपनी मानकर उसको अच्छे काम में लगाते हो तो कई गुना हो के ऐहिक नश्वर चीजें मिलती हैं लेकिन ईश्वर की मान के, ईश्वर की समझ के ईश्वर की प्रसन्नता के लिए लगाते हैं तो ईश्वर स्वयं मिलता है । आप बेपरदे हो जाते हैं । आप निर्दुःख, निर्द्वन्द्व हो जाते हैं, निरहंकारी हो जाते हैं । जब आप किसी वस्तु का, किसी योग्यता का अहं करते हैं तो ईश्वर भीतर देखता है और ईश्वर की जो पराशक्ति है वह आपको दबाती है, थप्पड़ मारती है । जैसे पतिव्रता स्त्री का पुत्र अगर अपने पिता का अपमान करता है तो माँ उसको सबक सिखाती है, दंडित करती है । ऐसे ही मिली हुई योग्यताएँ पारमात्मिक योग्यताएँ हैं, परमात्मा की ओर से मिली हैं; जब जीव उनको अपनी मानता है तो प्रकृति उसको थप्पड़ मारती है, दबाती है किंतु मिली हुई योग्यता देनेवाले की मानकर जीव उसकी प्रसन्नता के लिए उसका सदुपयोग करता है तो प्रकृति माता भी प्रसन्न होती है और परमात्मा स्वयं बेपरदा होने को राजी हो जाते हैं । संत कबीरजी ने कहा :

मेरो चिंत्यो होत नहिं, हरि को चिंत्यो होय ।
हरि को चिंत्यो हरि करे, मैं रहूँ निश्चिंत ॥

गुरु नानकजी ने कहा है :

जो तुधु भावै
साई भली कार ।
तू सदा सलामति निरंकार ॥

(हे निराकार परमात्मा ! जो तुझे अच्छा लगे वही श्रेष्ठ है और वही हो । तू सदा शाश्वत है ।)



संत तुलसीदासजी ने रामायण में भगवान शिवजी से कहलवाया :

उमा दारु जोषित की नाईं ।
सबहि नचावत रामु गोसाईं ॥

'हे उमा ! (सर्वव्यापक, रोम-रोम में रमनेवाले) स्वामी श्रीराम सबको कठपुतली की तरह नचाते हैं ।'

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा :

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥

'कर्म सब प्रकार प्रकृति के गुणों द्वारा किये जा रहे हैं किंतु अहंकार से जिसका अंतःकरण अत्यंत मूढ़ है वह 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा मानता है ।'

(गीता : ३.२७)

ये गुण और कर्म सब प्रकृति में हो रहे हैं परंतु अहंकार से जो विमूढ़ हो गया, ठीक ढंग से बेवकूफ हो गया है वह बोलता है : 'मैंने किया, मैंने किया, मैंने किया... ।' क्या अन्न पचाना तेरे हाथ की बात है ? क्या बालों को उगाना तेरी मेहनत है ? क्या श्वास चलाने का काम तूने किया ? क्या सब्जी और रोटी में से रक्त, मन और बुद्धि बनाना तेरी प्रक्रिया है ? क्या किशोर में से युवान तूने बनाया ? यह प्रकृति की और परमात्मा की लीला से हो रहा है । जन्म लेना तेरे हाथ की बात नहीं, मर जाना तेरे हाथ की बात नहीं, अमर रहना तेरे हाथ की बात नहीं । जब मुख्य काम उसके हाथ हैं तो छोटे-छोटे काम अपने अहं के सिर पर रखकर →

आदर्श नर-नारी का परस्पर कैसा हो दृष्टिकोण ?

प्रश्न : यदि नारी को नर भोग्या समझता है तो इसमें क्या दोष है ?

स्वामी अखंडानंदजी : अनेक दोष हैं :

(१) एकमात्र परमात्मा ही सत्य है - इस तात्त्विक सिद्धांत से च्युत हो जाना।

(२) अपने को देहाभिमानी भोक्ता मान बैठना।

(३) नारी को पंचभौतिक पुतला मानकर उसके प्रति स्थूल खाद्य पदार्थ - अन्न-जल आदि के समान व्यवहार करके अपमानित करना। इसी प्रवृत्ति से लोग स्त्री-जाति को सामान्य धन समझकर व्यापार करते हैं।



(४) अपवित्र में रमकर स्वयं नष्ट होना और दूसरे को नष्ट करना इत्यादि।

प्रश्न : नारी को 'माया' कहने का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर : 'माया' शब्द का प्रयोग उत्तम और अधम दोनों अर्थों में होता है। तथापि यहाँ दूसरे अर्थ पर विचार किया जाता है। माया का अर्थ है - हो कुछ और दिखावे कुछ और ! नर भ्रांति-परम्परा में विचरता हुआ इस स्थिति में पहुँच गया कि वह भोग-वासना के आवेश में अन्य की अपेक्षा नारीरूपधारी असंग चेतन को ही भोग्य समझने लगा। नारी ने सहयोग दिया - 'मैं सचमुच तुम्हारी भोग्या हूँ।' यह छलना है - माया है। वस्तुतः भोक्ता और भोग्य का भेद झूठा है। यदि देहावेश (देहाभिमान) को स्वीकार कर लें तो भी दोनों भोक्ता हैं। इस छलनामय भोग्यता के प्रदर्शन में जो नारियाँ आगे रहीं उन्हें ही 'माया' कहा गया है।

प्रश्न : अन्य पुरुषों के प्रति नारी की कैसी दृष्टि हो ?

उत्तर : जब अपने पति के सहवास का उद्देश्य ही काम पर विजय पाना है तब ऐसी कोई भी दृष्टि जिससे काम-वासना को उद्दीपन प्राप्त हो, किसीके प्रति भी कैसे की जा सकती है ? इसीसे चाहे पतिदेव इस लोक में हों चाहे न हों, नारी का धर्म यही है कि स्वप्न में भी अपने मन में बुरे भाव न आने दे। जो लोग वासनाओं का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करते हैं और कहते हैं कि 'नारी उन्हें (वासनाओं को) वश में नहीं कर सकती', वे नारी का अपमान करते हैं। उनकी बातों में आकर नारियों को अपने व्रत से च्युत नहीं होना चाहिए और किसी भी दृष्टि से पिता, भाई, पुत्र मानकर भी पर-पुरुष से हेल-मेल (उठ-बैठ) नहीं बढ़ाना चाहिए। किसी-किसीका कहना है कि 'भगवान श्रीरामचन्द्रजी जब अत्रि मुनि के आश्रम में गये तब अनसूयाजी उन्हें प्रणाम करने तक नहीं आयीं, मिलने की तो बात दूर है।' वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि लंका में हनुमानजी ने सीताजी से कहा कि ''माता ! आप मेरी पीठ पर बैठकर भगवान के पास चलें।'' तो उन्होंने स्पष्टरूप से मना कर दिया। बोलीं : ''हरण के समय विवशता के कारण मुझे रावण का स्पर्श प्राप्त हुआ। अब मैं जानबूझकर तुम्हारा स्पर्श नहीं कर सकती।'' सती-साध्वी नारियों के अंतःकरण स्वतः ही ऐसे पवित्र होते हैं। ❐

→ क्यों बोझीला बनना ?

ॐ ॐ शांति... ॐ ॐ प्रभुजी ! ॐ ॐ प्यारेजी ! ॐ ॐ मेरेजी ! ॐ ॐ मधुर शांति... हरि शरणम्... हरि शरणम्... हरि शरणम्... ॐ शांति शांति शांति... कुछ समय मधुमय शांति में, माधुर्य में मस्त... ॐ शांति... ❐

आरती क्यों करते हैं ?

हिन्दुओं के धार्मिक कार्यों में, संध्योपासना तथा किसी भी मांगलिक पूजन में आरती का एक विशेष स्थान है । शास्त्रों में आरती को 'आरात्रिक' अथवा 'नीराजन' भी कहा गया है।

संस्कृति विज्ञान

पूज्य बापूजी वर्षों से न केवल आरती की महिमा, विधि, उसके वैज्ञानिक महत्त्व आदि के बारे में बताते रहे हैं बल्कि अपने सत्संग-समारोहों में सामूहिक आरती द्वारा उसके लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव भी करवाते रहे हैं ।

पूज्य बापूजी के सत्संग-अमृत में आता है : ''आरती एक प्रकार से वातावरण में शुद्धीकरण करने तथा अपने और दूसरे के आभामंडलों में सामंजस्य लाने की एक व्यवस्था है । हम आरती करते हैं तो उससे आभा (aura), ऊर्जा मिलती है । हिन्दू धर्म के ऋषियों ने शुभ प्रसंगों पर एवं भगवान की, संतों की आरती करने की जो खोज की है वह हानिकारक जीवाणुओं को दूर रखती है, एक-दूसरे के मनोभावों का समन्वय करती है और आध्यात्मिक उन्नति में बड़ा योगदान देती है।

शुभ कर्म करने के पहले आरती होती है तो शुभ कर्म शीघ्रता से फल देता है । शुभ कर्म करने के बाद अगर आरती करते हैं तो शुभ कर्म में कोई कमी रह गयी हो तो वह पूर्ण हो जाती है । स्कंद पुराण में आरती की महिमा का वर्णन है । भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं पूजनं मम ।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने सुत ॥

'जो मंत्रहीन एवं क्रियाहीन (आवश्यक विधि-विधानरहित) मेरा पूजन किया गया है, वह मेरी आरती कर देने पर सर्वथा परिपूर्ण हो जाता है ।'

(स्कंद पुराण, वैष्णव खंड, मार्गशीर्ष माहात्म्य : ९.३७)

ज्योत की संख्या का रहस्य

सामान्यतः ५ ज्योतवाले दीपक से आरती की जाती है, जिसे 'पंचप्रदीप' कहा जाता है । आरती में या तो एक ज्योत हो या तो तीन हों या तो पाँच हों । **ज्योत विषम संख्या (१, ३, ५, ...) में जलाने से वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है । यदि ज्योत की संख्या सम (२, ४, ६, ...) हो तो ऊर्जा-संवहन की क्रिया निष्क्रिय हो जाती है ।**



अतिथि की आरती क्यों ?

हर व्यक्ति के शरीर से ऊर्जा, आभा निकलती रहती है । कोई अतिथि आता है तो हम उसकी आरती करते हैं क्योंकि सनातन संस्कृति में अतिथि को देवता माना गया है । हर मनुष्य की अपनी आभा है तो घर में रहनेवालों की आभा को उस अतिथि की नयी आभा विक्षिप्त न करे और वह अपने को पराया न पाये इसलिए आरती की जाती है । इससे उसको स्नेह-का-स्नेह मिल गया और घर की आभा में घुल-मिल जाने के लिए आरती के २-४ चक्कर मिल गये । कैसी सुंदर व्यवस्था है सनातन धर्म की !''

(क्रमशः) ❐

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर
(१) ब्रह्मज्ञानी के वचन (२) अज्ञान (३) सद्गुरु

देहत्रय-साक्षी विवेक

(पिछले अंक में आपने 'कारण शरीर का विवेक' इसका कुछ भाग पढ़ा। उसी शृंखला में अब आगे...)

कारण शरीर का विवेक

तत्त्व दर्शन

अविद्या का वर्गीकरण

'मैं साक्षी ब्रह्म हूँ' यह न जानना मूल अज्ञान है। इसको **तूलाविद्या (मूल अविद्या)** भी कहते हैं। 'मैं अमुक विषय को नहीं जानता' इस अज्ञान में विषय का अज्ञान है। इस अज्ञान को **तूलाविद्या (तूल अविद्या)** कहते हैं। आत्मा को ब्रह्म न जानना **कारण-मूलाविद्या** है और आत्मा को जीव जानना **कार्य-मूलाविद्या** है। रस्सी को रस्सी न जानना **कारण-तूलाविद्या** है और उसे सर्प, माला आदि जानना **कार्य-तूलाविद्या** है।

एक के विज्ञान से सर्व का विज्ञान कैसे ?

उपनिषद् की प्रतिज्ञा है कि एक के विज्ञान से सर्व का विज्ञान हो जाता है और उदाहरण दिया है मृत्तिका से बने घड़ा, कटोरा आदि का (मिट्टी पहचान लेने पर यह पता चलता है कि घड़ा, कटोरा आदि मिट्टी मात्र हैं)। **ब्रह्मज्ञान के द्वारा जब कारण शरीर भंग हो जाता है तब सब विषय उसे (अनुभवकर्ता को) ब्रह्मरूप अनुभव हो जाते हैं।**

देहत्रय-साक्षी विवेक का प्रयोजन

यहाँ यह खयाल रखना चाहिए : 'अविद्या (वृत्ति रूप से) बुद्धि में ही रहती है, वहीं जहाँ विद्या रहती है। इसलिए सूक्ष्म शरीर अविद्या का आश्रय है किंतु अविद्या स्वयं कारण शरीर है।' यों भी कह सकते हैं कि अविद्या का कार्य 'मैं कर्ता, भोक्ता, सुखी, दुःखी, संसारी, परिच्छिन्न (सीमित) जीव हूँ' यह विपरीत ज्ञान और इसके आश्रित रहनेवाले काम (कामनाएँ, संकल्प) और कर्म सूक्ष्म शरीर के भाग हैं जबकि अविद्या स्वयं कारण शरीर है।

'मेरा हीरा हिराय गयो कचरे में' - आपका यह हीरा 'साक्षी आत्मा' इन तीन शरीर के ढेर में, कूड़े में, कचरे में खो गया है। इन तीनों देहों **के साक्षी को विवेक करके, विचार करके इस कचरे से अलग कर लीजिये। यही इस देहत्रय-साक्षी विवेक का प्रयोजन है।** (क्रमशः) ❐

प्रसन्नता और समता बनाये रखने का सरल उपाय

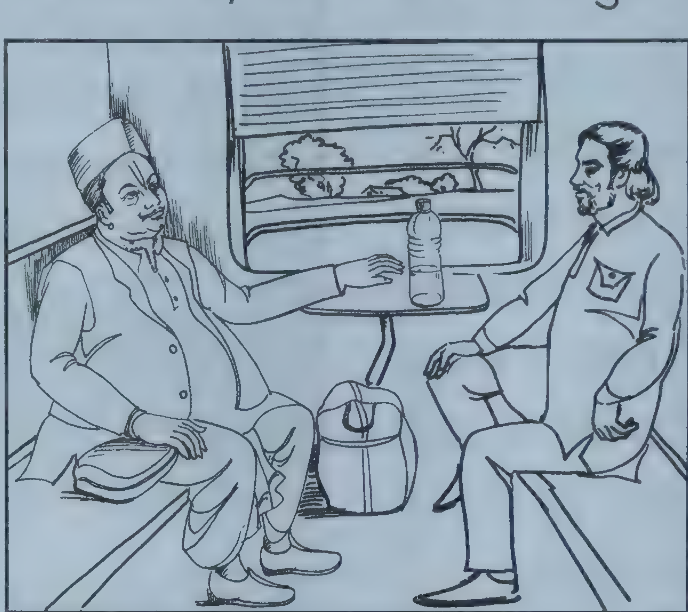
- पूज्य बापूजी

प्रसन्नता बनाये रखने और उसे बढ़ाने का एक सरल उपाय यह है कि सुबह अपने कमरे में बैठकर जोर-से हँसो। आज तक जो सुख-दुःख आया वह बीत गया और जो आयेगा वह बीत जायेगा। जो होगा, देखा जायेगा। आज तो मौज में रहो। भले झूठमूठ में ही हँसो। ऐसा करते-करते सच्ची हँसी भी आ जायेगी। उससे शरीर में रक्त-संचरण ठीक से होगा। शरीर तंदुरुस्त रहेगा। बीमारियाँ नहीं सतायेंगी और दिनभर खुश रहोगे तो समस्याएँ भी भाग जायेंगी या तो आसानी से हल हो जायेंगी।

व्यवहार में चाहे कैसे भी सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान के प्रसंग आयें पर आप उनसे विचलित हुए बिना चित्त की समता बनाये रखोगे तो आपको अपने आनंदप्रद स्वभाव को जगाने में देर नहीं लगेगी क्योंकि चित्त की विश्रांति परमात्म-प्रसाद की जननी है। ❐

ईश्वर से आँख-मिचौनी का खेल !

ईश्वर से आँख-मिचौनी खेल हो रहा है । वह छिपा हुआ है, तुम ढूँढ़ रहे हो । प्रलयकाल में तुम छिपते हो, वह ढूँढ़ निकालता है । सृष्टिकाल में वह छिपता है, तुम ढूँढ़ रहे हो । वह कहाँ छिपा है ? वह ढूँढ़नेवाले में छिपा है । ईश्वर है, यहीं है, अभी है । इस शरीर के भीतर जो सबसे स्थायी चीज है, उससे मिलकर रहता है । ईश्वर छिपेगा कहाँ ? जो चीज क्षण-क्षण में बदलती है, यदि उसमें ईश्वर छिपेगा तो पकड़ा जायेगा । जो चीज क्षण-क्षण में नहीं बदलती है, उसमें ईश्वर छिपा हुआ है । ईश्वर ने अपने छिपने के लिए जो लिहाफ (रजाई) बनाया है, जो खोल बनाया है, वह तुम स्वयं हो। अपने-आपमें ढूँढ़ो ।



एक सेठ था । वह यात्रा कर रहा था । उसके पास बहुत रुपया था । एक चोर ने भाँप लिया कि सेठ के पास बहुत रुपया है । वह रेलगाड़ी में उसके साथ हो गया । सेठ के डिब्बे में ही चोर ने अपनी सीट रिजर्व करा ली । सेठ भी समझ गया था कि यह चोर है । अब सेठ ने दिन में तो रुपये निकाल के उसके सामने गिने और अपने तकिये के नीचे रख दिये । शाम को जब चोर शौचालय में गया, तब उसके तकिये में रुपये घुसेड़ दिये । रात को जब सेठ शौचालय में गया, तब चोर ने सेठ के तकिये के नीचे रुपये ढूँढ़े किंतु कुछ भी हाथ नहीं लगा । जब सेठ सो गया तब चोर ने रुपये खोजे परंतु तब भी नहीं मिले । चोर बड़ा ही परेशान था । उसने सेठ को बेहोश करके बहुत देर तक रुपये ढूँढ़े लेकिन निराशा ही हाथ लगी । सेठ के पास रुपये हों तब तो मिलें, रुपये तो चोर के तकिये में छिपाये गये थे । कोलकाता-मुंबई का लम्बा सफर बीत गया, रेलगाड़ी से उतरने का समय हुआ ।

चोर ने कहा : ''सेठ ! मैंने तुम्हें मान लिया मैं हूँ चोर । रुपये चुराने के लिए तुम्हारे साथ लगा था । दिन में तो तुम्हारे पास हजारों रुपये देखे और रात में कुछ भी नहीं मिला । बात क्या है ? आखिर तुम ये रुपये रखते कहाँ हो ?''

सेठ हँसने लगा । वह बोला : ''भैया ! मैं कोलकाते में ही समझ गया था कि तुम चोर हो । बात कुछ नहीं है मैंने सारे-के-सारे रुपये शाम को जब तुम शौचालय में गये थे, तब तुम्हारे तकिये में रख दिये थे । फिर जब सुबह गये थे, तब निकाल लिये थे और अपने तकिये में रख दिये थे ।'' चोर ने लम्बी ठंडी साँस लेते हुए कहा : ''राम राम ! मेरे तकिये में हजारों रुपये आये और चले भी गये । मुझे नहीं मिले । वाह ! सेठ ! तुमने छिपाने में कमाल कर दिया ।''

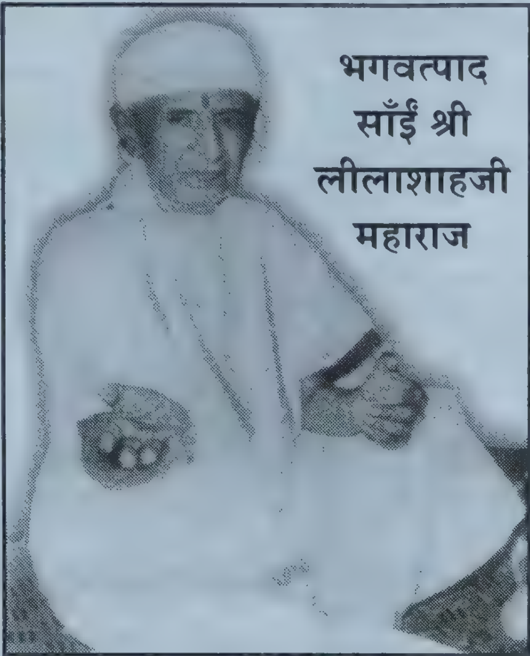
ईश्वर अपने को कहाँ छिपाता है ? ईश्वर अपने को तुम्हारे मैं में छिपाये हुए है । ईश्वर अपने को आँख में नहीं छिपाता, नाक में नहीं छिपाता । वह अपने को तुम्हारे मैं में छिपाता है । तुम ढूँढ़ते हो कि 'ईश्वर कहीं मिल जाय' और वह तुम्हारे हृदय में छिपा हुआ है । तुम अपने हृदयस्थ ईश्वर को ढूँढ़ नहीं सके । उसे प्राप्त नहीं कर सके । तुम ऐसे कच्चे खिलाड़ी हो कि

(शेष पृष्ठ २६ पर)

ज्ञानी का कर्तव्य नहीं स्वनिर्मित विनोद होता है

- पूज्य बापूजी

एक श्रद्धालु माई मिठाई बना के लायी और मेरे को दे के बोली : ''कुछ भी करके साँईं (पूज्य बापूजी के सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) खायें ऐसा करो, हमारी मिठाई पहुँचती नहीं वहाँ ।''



भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

मैंने ले ली । डीसा में साँईं आये थे । सुबह-सुबह सत्संग हुआ तो कुछ गिने-गिनाये साधकों के बीच था । तो साँईं ने पूछा : ''क्या हुआ ?''

मैंने उसकी मिठाई और प्रार्थना श्रीचरणों में निवेदित की ।

साँईं बोले : ''अब ले आओ भाई ! जो भाग्य है, भोग के छूटेंगे और क्या है ! लाओ, थोड़ा खा लें ।''

अब खा रहे हैं, 'बढ़िया है ।' बोल भी रहे हैं लेकिन कोई वासना नहीं है । खा रहे हैं परेच्छा-प्रारब्ध से (परेच्छा = पर इच्छा, दूसरों की इच्छा), मिल लिया परेच्छा से । अपने जो भी सत्संग-कार्यक्रम होते हैं, मैं उनके बारे में खोज-खोज के थक जाता हूँ कि 'मेरी इच्छा से मैं कोई कार्यक्रम तो नहीं कर रहा हूँ ?' नहीं, लोग आते हैं - जाते हैं, उनकी बहुत इच्छा होती है तब परेच्छा-प्रारब्ध से कार्यक्रम दिये जाते हैं । आज तक के सभी कार्यक्रमों पर दृष्टि डाल के देख लो, कोई भी कार्यक्रम मैंने अपनी इच्छा से दिया हो तो बताओ । विद्यार्थियों के लिए होता है कि 'चलो, सुसंस्कार बँट जायें', वह भी इसलिए कि उनकी इच्छाएँ होती हैं, उनके संकल्प होते हैं । या जो ध्यानयोग शिविर देता हूँ और मेरी सहमति होती है तो शिविर के भी लोगों की पात्रता होती है, उनका पुण्य मेरे द्वारा यह करवा लेता है । मैं ऐसा नहीं सोचता कि 'चलो, शिविर करें, लोग आ जायें, अपने को कुछ मिल जाय, अपना यह हो जाय...' या 'चलो, सारा संसार पच रहा है, इस बहाने लोगों को थोड़ा बाहर निकालें ।' ऐसा नहीं होता मेरे को ।

संत लोग कहते हैं कि 'लोकोपकार, लोक-संग्रह यह ज्ञानी (आत्मज्ञानी) का कर्तव्य नहीं है, स्वनिर्मित विनोद है ।' ऐसा नहीं कि संतों का कर्तव्य है कि समाज को ऊपर उठायें । कर्तव्य तो उसका है जिसको कुछ वासना है, कुछ पाना है । जो अपने-आपमें तृप्त हैं उनका कोई कर्तव्य नहीं । शुद्ध ज्ञान नहीं हुआ तब तक कर्तव्य है । जब तक शुद्ध ज्ञान नहीं हुआ, अपने 'मैं' का ज्ञान नहीं हुआ, तब तक वह अज्ञानी माना जाता है । तो

जा लगी माने कर्तव्यता ता लगी है अज्ञान ।

जब तक कर्तव्यता दिखती है तब तक अज्ञान मौजूद है, ईश्वर के तात्त्विक स्वरूप का ज्ञान (निर्विशेष ज्ञान) नहीं हुआ । ईश्वर का दर्शन भी हो जाय तब भी यदि निर्विशेष ज्ञान नहीं हुआ तो कर्तव्य मौजूद रहेगा । ईश्वर के दर्शन - कृष्णजी, रामजी, शिवजी के दर्शन के बाद भी निर्विशेष शुद्ध ज्ञान = तत्त्वज्ञान की प्राप्ति की जरूरत पड़ती है । ❒

अमृतबिंदु

- पूज्य बापूजी

ईश्वरप्राप्ति माने क्या ? वासना की निवृत्ति हो जाय और अपने-आपमें शांत सुख का अनुभव हो जाय तो यही है ईश्वरप्राप्ति ! निर्विकार, निर्विषय सुख ईश्वरप्राप्ति है ।

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

संतों से ही व्यवहार



– गुरु अर्जुनदेवजी

हे भाई ! आत्मज्ञानी संतों के साथ मेरा लेन-देन है और उनके साथ ही मेरा व्यवहार है अर्थात् सम्पर्क है । जिनके हृदयरूपी भंडार भगवद्भक्ति से भरे हुए हैं उन संतों की संगति में हमने लाभ प्राप्त किया है ।

सत्संग में प्रीति कैसे बढ़े ?



– श्री उड़िया बाबाजी

प्रतिदिन सत्संग करने से सत्संग में प्रीति बढ़ती है । एक दिन सत्संग में गये और चार दिन नहीं गये, इससे प्रीति नहीं बढ़ती ।

इससे दोनों अपने-आप सँभल जाते हैं



– स्वामी शरणानंदजी

वर्तमान परिस्थिति को सँभालने का प्रयत्न करो क्योंकि वर्तमान को सँभालने से बिगड़ा हुआ भूत तथा आनेवाला भविष्य दोनों अपने-आप सँभल जाते हैं ।

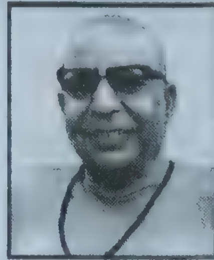
यही सार है

– संत दयाबाई

चरनदास गुरदेव ने मो सूँ कह्यो उचार ।
दया अहर-निसि★ जपत रहुं
सोहं सुमिरन सार ॥

★ दिन-रात

सच्ची गुरु-दक्षिणा



– स्वामी अखंडानंदजी

गुरुजी ने जो सिखाया है उसमें पूर्णरूप से दक्ष होना ही शिष्य की सच्ची गुरु-दक्षिणा है ।

...उनका अवश्य उद्धार होगा



– श्री रमण महर्षि

ईश्वर और गुरु वस्तुतः भिन्न नहीं हैं । जैसे शेर के मुख में पड़ा हुआ शिकार बच नहीं सकता, ऐसे ही जो लोग सद्गुरु की कृपादृष्टि के पात्र हैं उनका अवश्य उद्धार होगा और उनका कभी भी त्याग नहीं किया जायेगा । फिर भी मनुष्य को (भाग्यवादी होकर आलसी-प्रमादी नहीं होना चाहिए बल्कि) सद्गुरु के बताये मार्ग पर अवश्य चलना चाहिए ।

(पृष्ठ २४ से 'ईश्वर से आँख-मिचौनी...' का शेष)

अपने ही हृदय में विराजमान ईश्वर को पहचान नहीं सके । क्या खेल है तुम्हारा ? जरा उसका खेल तो देखो । अद्भुत खिलाड़ी है । गजब का खेल है ।

आप ही अमृत[१], आप अमृतघट[२],
आप ही पीवनहारी[३] ।
आप ही ढूँढ़े[४], आप ढुँढ़ावे[५],
आप ही ढूँढ़नहारी[६] ॥

आपन खेलु[७] आपि करि देखै ।
खेलु संकोचै[८] तउ[९] नानक एकै[१०] ॥

१. आत्मा २. शरीर ३. आत्मरस का पान करनेवाली वृत्ति ४. ढूँढ़ने की क्रिया ५. ढूँढ़नेवाला ६. परमात्मा को ढूँढ़नेवाली वृत्ति ७. खेल ८. समेटे ९. तब १०. एक परमात्मा ही रह जाता है

बापू आशारामजी को जल्द-से-जल्द छोड़ा जाना चाहिए

आप कहते हैं...



महंत हरिदासजी महाराज, दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या : परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने धर्म, संस्कृति हेतु एवं 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' बहुत सारे काम किये हैं। उन्हें जल्द-से-जल्द जमानत दी जाय । कोई चाहे कितनी भी कोशिश कर ले पर लोगों के हृदय में जो बापूजी का स्थान है उसको कोई नहीं मिटा पायेंगे ।

महंत परमेश्वरदासजी, महामंत्री, भारत साधु समाज, दक्षिण गुजरात : आशारामजी बापू जैसे महान संत, देशभक्त एवं विश्वहितैषी को झूठा आरोप लगा के जेल भेजा गया है । उनकी तबीयत ठीक नहीं है फिर भी उनको जमानत नहीं



दी जा रही है। उनके साथ अन्याय किया जा रहा है । यह अन्याय बंद कर बापूजी को जेल से रिहा किया जाना चाहिए ताकि फिर से धर्म का प्रचार हो, लोगों का कल्याण हो, गरीबों को भोजन-वस्त्र मिलें और धर्मांतरित हुए हिन्दू पुनः स्वधर्म के प्रति जागृत हों, स्वधर्मनिष्ठ बनें। जो जिंदा भगवान हैं उनको पहचानो, आँखें खोलो । सारी प्रजा एक आवाज में सरकार से और सबके सामने कहे कि 'ये जो वर्तमान के राम हैं इनको छोड़ो ।' ये राम तुमसे कुछ नहीं माँग रहे, ये तो तुम्हारे कल्याण के लिए आये हैं और उन्हींको दोषी बनाकर जेल में रख दिया है !

(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता) ❒

काव्य गुंजन

प्राण तुम बिन रो रहे हैं...

हृदय-धन[1] ! तुमको न पाकर,
शून्यता की शरण जाकर ।
मनो-मंदिर में तुम्हारी,
मानसिक प्रतिमा बिठाकर ।
इस सुलभ सद्भाव से,
निज कलुषता को धो रहे हैं ॥
प्राण तुम बिन...

आज सूनी राह मेरी,
कौन जाने आह मेरी ।
यह अरण्य-रुदन हमारा,
विफल है सब चाह मेरी ।
भग्न उर-अरमान मेरे,
व्यथा मूर्छित सो रहे हैं ॥
प्राण तुम बिन...

विभवभूति[2] असार तुम बिन,
शून्य सब श्रृंगार तुम बिन ।
उठ रहे क्या हृदय में,
मूक हृदयोद्गार तुम बिन ।
तुम्हीं देखो किस तरह हम,
व्यर्थ जीवन खो रहे हैं ॥
प्राण तुम बिन...

तुम्हें तज हम कहाँ जायें,
तुम्हींको अपनी सुनायें ।
बता दो क्या करें,
जिससे तुम्हें परमाधार पायें ।
हम पथिक अब तो तुम्हारे
ही भिखारी हो रहे हैं ॥
प्राण तुम बिन...

- संत पथिकजी

१. परमात्मदेव २. वैभव, ऐश्वर्य सुख

कल्पितरूप अहंकार के त्याग का उपाय

('**पराशर-मैत्रेय संवाद**' अंक ३४२ से आगे)

महर्षि पराशरजी अपने शिष्य मैत्रेय से कहते हैं : ''हे मैत्रेय ! **आदि-मध्य-अंत अपनेसहित सर्व को नारायण जान।** जब अस्ति (अस्तित्व), भाति (चेतन, ज्ञान), प्रिय (आनंद) रूप अधिष्ठान सर्व नारायण है तब कल्पितरूप अहंकार पृथक् कहाँ रहेगा ? बल्कि **अहंकार भी नारायण है, यही अहंकार का त्याग है।** जैसे - नाम-रूप से कल्पित भूषण सुवर्णरूप हैं या सुवर्ण में भूषण हैं ही नहीं, केवल सुवर्ण ही अपनी महिमा में स्थित है - यही जानना भूषणों का त्याग है। घट-पट आदि पदार्थ मिट्टीरूप जानना या मिट्टी में उन घट-पट आदि पदार्थों का अत्यंताभाव जानना, यही घट-पट आदि का त्याग है। स्वप्नद्रष्टा में कल्पित स्वप्न-पदार्थ स्वप्नद्रष्टारूप हैं या स्वप्नद्रष्टा में स्वप्न-पदार्थ हैं ही नहीं क्योंकि अधिष्ठान में अध्यस्त (कल्पित पदार्थ) प्रतीतिमात्र ही है, स्वरूप से पृथक् सत्तावाला नहीं कारण कि जागने से स्वप्न-पदार्थों की प्रतीति का अत्यंताभाव होता है, यदि पदार्थ सच्चे होते तो जागने पर दूर न होते।



कल्पित पदार्थों के त्याग में शारीरिक या मानसिक कर्तव्य नहीं चाहिए बल्कि निजात्म-अधिष्ठान के जानने मात्र से ही कल्पित की निवृत्ति होती है। इसीसे बंध-मोक्ष की निवृत्ति और प्राप्ति हेतु शारीरिक कर्तव्य कुछ नहीं, केवल बोधरूप आत्मा का जानना ही कर्तव्य है।

'कल्पित पदार्थ मुझको प्रतीत ही न हों, जब कल्पित पदार्थों का नाश होगा तब ही मैं ज्ञानी होऊँगा।' ऐसे नहीं जानना किंतु **कल्पित पदार्थों की प्रतीति होते हुए भी उनको अधिष्ठानरूप जानना या उनका मिथ्यात्व (अभाव) जानना, यही कल्पित पदार्थों का नाश या त्याग है और यही ज्ञानीपना है।**'' ('**आध्यात्मिक विष्णु पुराण**' से क्रमशः)

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

निम्न प्रश्नों के उत्तर हेतु यह अंक ध्यान से पढ़ें।

(१) नवरात्रि .... का संदेश देनेवाली है।

(२) .... करने से भगवान में हमारी आसक्ति दिनोंदिन बढ़ती है।

(३) ..... से बुद्धि का विकास होता है और .... से बुद्धि का विनाश होता है।

(४) 'मैं साक्षी ब्रह्म हूँ' यह न जानना .... है।

(५) व्यक्ति अगर संयमी है, उसमें वैराग्य है और सद्गुरु की आज्ञा में चलता है तो ...... एकदम विहंगम मार्ग है। (उत्तर अगले अंक में)

मैं तेरे चरणों में बँध गया हूँ

- संत तुकारामजी

तुजविण कोणा।... ...जडूनि ठेलों तुझ्या पायीं॥



(हे निर्गुण-निराकार और सगुण-साकार सर्वव्यापक) नारायणा ! मैं तेरे सिवा किसकी शरण जाऊँ ? क्योंकि पुराणों को देखा, दर्शनशास्त्रों का भी विचार किया परंतु त्रिभुवन में तेरे जैसा सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान दूसरा कोई भी दिखता नहीं है। इसलिए मैं तेरे चरणों में बँध गया हूँ। ❒

कर्जदार से बना दिया २ फैक्ट्रियों का मालिक



पूज्य बापूजी से दीक्षा लेने से पहले हमारी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी, बड़ी कठिनाई से गुजारा होता था। लगभग ५ लाख का कर्ज हो गया था। मैं बड़ा परेशान रहता था। सौभाग्य से हमें पूज्य बापूजी का सत्संग मिला, उससे बड़ा बल मिला। पहले चिंता के कारण हमें रात को नींद भी नहीं आती थी लेकिन सत्संग से मिली सकारात्मक समझ से हम विपरीत परिस्थितियों में भी आनंद से रहने लगे।

मैंने पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा ली। भागीदारी में प्लाइवुड का व्यवसाय शुरू किया। सन् १९९२ में मोडासा आश्रम के निर्माण के समय हमें अपनी कुछ जमीन अर्पित करने का सौभाग्य मिला।

उसके बाद मेरे जीवन में चमत्कार होने लगे। गुरुकृपा से हमारा व्यवसाय इतना बढ़िया चलने लगा कि कुछ ही दिनों में मैंने प्लाइवुड की खुद की दुकान खोली। फिर सन् १९९७ में पूज्य गुरुदेव के संकेतानुसार मैंने पेपर की मिल (फैक्ट्री) शुरू की। उससे अच्छी आमदनी होने लगी और मेरा वर्षों का कर्जा कुछ ही दिनों में उतर गया।

एक बार मोडासा आश्रम में पूज्य बापूजी ने सबके सामने कहा कि ''बाबूभाई की २-२ फैक्ट्रियाँ चल रही हैं।'' उस समय मेरी एक ही फैक्ट्री थी तो मैं असमंजस में पड़ गया परंतु सन् २००९ में पूज्य बापूजी की वह सहज वाणी सत्य साबित हुई और मेरी दूसरी फैक्ट्री भी खुल गयी, जिसका उद्घाटन २०११ में स्वयं गुरुदेव के करकमलों से हुआ।

एक समय था कि हमारा बड़ी कठिनाई से गुजारा होता था, आज पूज्य बापूजी की कृपा से २-२ फैक्ट्रियाँ चल रही हैं, जिनमें लगभग २०० लोग काम कर रहे हैं। मैं प्रतिदिन बड़ बादशाह की परिक्रमा करके ही फैक्ट्री में जाता हूँ। मेरा यह नियम लगभग २५ वर्षों से निरंतर चल रहा है। कृपामूर्ति पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

- बाबूभाई पटेल

सचल दूरभाष : ९८२५०९६३७०

दो प्रकार का शासन

- पूज्य बापूजी

संयम या शासन दो तरह का होता है :

(१) दूसरों पर शासन करना।

(२) अपने पर शासन करना।

दूसरों पर शासन करके शोषण करना यह अहंकारी राजाओं और नेताओं का काम है, यह स्वार्थपूर्ण होने से सद्गति नहीं देता। लेकिन दूसरों को भय से बचाकर उनकी भलाई चाहना, दूसरों के दोष मिटाने के लिए उन पर शासन करना, जैसे माँ, गुरु, भगवान करते हैं - यह उत्तम व सात्त्विक शासन है। और अपनी मन-इन्द्रियों पर शासन करके विकारों से बचना यह भी उत्तम शासन है।

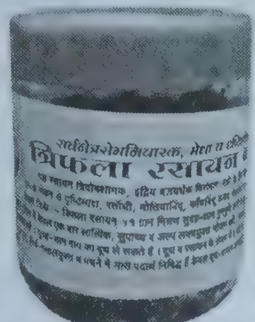
दूसरों पर सात्त्विक शासन करना और 'स्व' पर स्वाभाविक शासन होना - ये दोनों सद्गुण भगवान और भगवान को पाये हुए महापुरुषों में स्वतःसिद्ध होते हैं; साधकों को इनका यत्न करना पड़ता है। और मूर्ख लोग शासनहीन होने से नीच गतियों में, पशु-योनियों में परेशान होते हैं। तो अच्छी बातों को स्वीकार कर लो, बुरी बातों से बचने के लिए अपने मन व इन्द्रियों पर थोड़ा शासन करो और शासन करने में भगवान व भगवत्प्राप्त महापुरुषों का आश्रय और प्राणायाम - दोनों मदद करेंगे। ❑



त्रिफला-सेवन के अनेक लाभ



स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदायक एक बहुश्रुत औषधि है - त्रिफला चूर्ण। आँवला, बहेड़ा और हरड़ के सम्मिश्रण से बना यह चूर्ण त्रिदोषशामक, विशेषरूप से कफ-पित्तशामक, नेत्रों के लिए परम हितावह, जठराग्नि-प्रदीपक, भोजन में रुचि उत्पन्न करनेवाला, पेट साफ व घाव को ठीक करनेवाला, रक्त व त्वचा विकारों को दूर करनेवाला, हृदय-हितकर, उत्तम रसायन (tonic) और शरीर में किसी भी स्थान में संचित सूक्ष्म मल को साफ करनेवाला है।





सेवन-वर्ष के अनुसार लाभ

अगर कोई व्यक्ति नियमितरूप से प्रातः बिना कुछ खाये-पिये ताजे पानी के साथ त्रिफला का सेवन करता है तो अनेक लाभ होते हैं, इस बारे में कहावत है :

प्रथम वर्ष तन सुस्ती जाय।
द्वितीय रोग सर्व मिट जाय ॥
तृतीय नैन बहु ज्योति समावे।
चतुर्थे सुंदरताई आवे ॥
पंचम वर्ष बुद्धि अधिकाई।
षष्ठम महाबली हो जाई ॥
श्वेत केश श्याम होय सप्तम।
वृद्ध तन तरुण होई पुनि अष्टम ॥
दिन में तारे देखें सही।[1]
नवम वर्ष फल अस्तुत कही ॥
दशम शारदा कंठ विराजे।
अंधकार हिरदै का भाजे ॥[2]
जो एकादश द्वादश खाये।
ताको वचन सिद्ध हो जाये ॥

त्रिफला-सेवन के बाद २ से २.५ घंटे तक कुछ खाना-पीना नहीं चाहिए। शुरू में इसके सेवन से एक या दो पतले दस्त हो सकते हैं किंतु इससे घबरायें नहीं। वृद्ध तथा किसी रोग से ग्रस्त व्यक्ति सेवन की मात्रा वैद्यकीय सलाह-अनुसार निश्चित करें।

त्रिफला रुक्ष होता है अतः लम्बे समय तक सेवन करने के लिए देशी गाय के घी अथवा काले तिल के तेल के साथ मिलाकर ऊपर से गर्म पानी पीना अधिक हितकारी होता है। (घीयुक्त त्रिफला रसायन विशेषकर अहमदाबाद, सूरत, करोलबाग-दिल्ली, गोरेगाँव-मुंबई आदि मुख्य आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा ashramestore.com **द्वारा प्राप्त हो सकता है।** विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें 'ऋषि प्रसाद', जुलाई २०२१, पृष्ठ ३१)

त्रिफला सेवन-मात्रा : चूर्ण - ३ से ५ ग्राम अथवा गोलियाँ - ३ से ४

मास-अनुसार त्रिफला का अनुपान

मासों के अनुसार त्रिफला के साथ उसमें, उसकी मात्रा के छठे भाग बराबर निम्नलिखित द्रव्यों को मिला के सेवन करने से उसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।

(१) श्रावण और भाद्रपद - सेंधा नमक

(२) आश्विन और कार्तिक - शर्करा (मिश्री या खाँड़ अर्थात् अपरिष्कृत शक्कर)

(३) मार्गशीर्ष और पौष - सोंठ चूर्ण

→

१. नेत्रज्योति विशेष शक्तिसम्पन्न हो जाती है। २. हृदय का अंधकार भगाने में भी सहायता मिलने लगती है।

शरद ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा

(शरद ऋतु : २२ अगस्त से २२ अक्टूबर)

वर्षा ऋतु में संचित पित्तदोष शरद ऋतु में प्रकुपित होता है । आयुर्वेद में पित्त को नष्ट करने के लिए आहार में छः रसों में से ३ रस अर्थात् कषाय (कसैला), मधुर व तिक्त (कड़वा) रस-प्रधान पदार्थों का सेवन हितकारी बताया गया है ।

मधुर रसयुक्त पदार्थ : देशी गाय का दूध व घी, शहद, केला, नारियल, गन्ना, काली द्राक्ष, किशमिश, मिश्री, मधुर फल आदि ।

कड़वे रसयुक्त पदार्थ : नीम, चिरायता, गिलोय, हल्दी, करेला, अडूसा आदि ।

कसैले रसयुक्त पदार्थ : आँवला, हरड़, त्रिफला, जामुन, पालक, अनार आदि ।

पित्त-प्रकोप से फोड़े-फुंसी, दाद, खाज, खुजली, रक्तपित्त, त्वचा-रोग, शीतपित्त, अम्लपित्त (hyperacidity), अजीर्ण जैसे लक्षण दिखाई देते हैं । **पित्तदोष दूर करने के लिए एलोपैथिक दवाइयों के सेवन से पित्त को दबाना नहीं चाहिए अन्यथा रक्त की अशुद्धि व पित्त की समस्याएँ और अधिक बढ़ने की सम्भावना होती है ।**

पित्तदोष-निवारण हेतु घरेलू उपाय



✻ देशी गाय का शुद्ध घी★★ उत्तम जठराग्नि-प्रदीपक व श्रेष्ठ पित्तशामक है । २ छोटे चम्मच घी भोजन के साथ सेवन करें । अथवा सुबह खाली पेट १ चम्मच घी हलका गुनगुना करके गर्म पानी के साथ सेवन करें व बाद में भूख लगने पर भोजन करें ।

✻ मक्खन-मिश्री खाने से भी लाभ होता है । (हमेशा ताजे मक्खन का ही उपयोग करें । बाजार में बिकनेवाले कई दिन पुराने मक्खन से परहेज रखना चाहिए ।)





✻ आँवला रस★, आँवले का मुरब्बा या आँवला कैंडी★ पित्त को कम करने के लिए काफी प्रभावशाली है ।

✻ ८ से १० काले मुनक्के रात को पानी में भिगोकर सुबह पानी के साथ लें । **मुनक्का पित्तशामक व मृदु विरेचक होता है । इससे पेट भी अच्छे-से साफ होगा ।**

✻ १-१ चम्मच गुलकंद दिन में १-२ बार ले सकते हैं । ❐

★ ये संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से व समितियों से प्राप्त हो सकते हैं ।

★★ श्योपुर गौशाला की देशी गायों के शुद्ध घी की विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें रंगीन आवरण पृष्ठ ३

⟶ (४) माघ तथा फाल्गुन - पीपर का चूर्ण

(५) चैत्र और वैशाख - शहद

(६) ज्येष्ठ तथा आषाढ़ - पुराना गुड़

इस प्रकार त्रिफला शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने में सहायक व प्रसादरूप है ।

(त्रिफला चूर्ण, त्रिफला टेबलेट, शहदयुक्त त्रिफला टेबलेट आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से व समितियों से प्राप्त हो सकते हैं ।) ❐

सर्वलाभ की कुंजी - पूज्य बापूजी

कैसा भी बीमार व्यक्ति हो, उसको हरिनाम की, 'हरि ॐ' की साधना दे दो, चंगा होने लगेगा । बिल्कुल पक्की बात है ! आपको स्वस्थ रहना है तो भी भगवान का नाम, प्रसन्न तथा निरहंकारी रहना है तो भगवान का नाम, उद्योगी एवं साहसी होना है तो भगवान का नाम और पूर्वजों का मंगल करना है तो भी भगवान का नाम... । ❐

श्राद्धकर्म व उसके पीछे के सूक्ष्म रहस्य - पूज्य बापूजी

जिन पूर्वजों ने हमें अपना सर्वस्व देकर विदाई ली, उनकी सद्गति हो ऐसा सत्सुमिरन करने का अवसर यानी 'श्राद्ध पक्ष'।

श्राद्ध पक्ष का लम्बा पर्व मनुष्य को याद दिलाता है कि 'यहाँ चाहे जितनी विजय प्राप्त हो, प्रसिद्धि प्राप्त हो परंतु परदादा के दादा, दादा के दादा, उनके दादा चल बसे, अपने दादा भी चल बसे और अपने पिताजी भी गये या जाने की तैयारी में हैं तो हमें भी जाना है।'

श्राद्ध पक्ष
२० सितम्बर से
६ अक्टूबर

श्राद्ध हेतु आवश्यक बातें

जिनका श्राद्ध करना है, सुबह उनका मानसिक आवाहन करना चाहिए। और जिस ब्राह्मण को श्राद्ध का भोजन कराना है उसको एक दिन पहले न्योता दे आना चाहिए ताकि वह श्राद्ध के पूर्व दिन संयम से रहे, पति-पत्नी के विकारी व्यवहार से अपने को बचा ले। फिर श्राद्ध का भोजन खिलाते समय -

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः॥

(अग्नि पुराण : ११७.२२)

यह श्लोक बोलकर देवताओं को, पितरों को, महायोगियों को तथा स्वधा और स्वाहा देवियों को नमस्कार किया जाता है और प्रार्थना की जाती है कि 'मेरे पिता को, माता को... (जिनका भी श्राद्ध करते हैं उनको) मेरे श्राद्ध का सत्त्व पहुँचे, वे सुखी व प्रसन्न रहें।'

श्राद्ध के निमित्त गीता के ७वें अध्याय का माहात्म्य पढ़कर पाठ कर लें और उसका पुण्य जिनका श्राद्ध करते हैं उनको अर्पण कर दें, इससे भी श्राद्धकर्म सुखदायी और साफल्यदायी होता है।

श्राद्ध करने से क्या लाभ होता है ?

आप श्राद्ध करते हैं तो

(१) आपको भी पक्का होता है कि 'हम मरेंगे तब हमारा भी कोई श्राद्ध करेगा परंतु हम वास्तव में नहीं मरते, हमारा शरीर छूटता है।' तो आत्मा की अमरता का, शरीर के मरने के बाद भी हमारा अस्तित्व रहता है इसका आपको पुष्टीकरण होता है।

(२) देवताओं, पितरों, योगियों और स्वधा-स्वाहा देवियों के लिए सद्भाव होता है।

(३) भगवद्गीता का माहात्म्य पढ़ते हैं, जिससे पता चलता है कि पुत्रों द्वारा पिता के लिए किया हुआ सत्कर्म पिता की उन्नति करता है और पिता की शुभकामना से पुत्र-परिवार में अच्छी आत्माएँ आती हैं।

ब्रह्माजी ने सृष्टि करने के बाद देखा कि 'जीव को सुख-सुविधाएँ दीं फिर भी वह दुःखी है' तो उन्होंने यह विधान किया कि एक-दूसरे का पोषण करो। आप देवताओं-पितरों का पोषण करो, देवता-पितर आपका पोषण करेंगे। आप सूर्य को अर्घ्य देते हैं, आपके अर्घ्य के सद्भाव से सूर्यदेव पुष्ट होते हैं और यह पुष्टि विरोधियों, असुरों के आगे सूर्य को विजेता बनाती है। जैसे रामजी को विजेता बनाने में बंदर, गिलहरी भी काम आये ऐसे ही सूर्य को अर्घ्य देते हैं तो सूर्य विजयपूर्वक अपना दैवी कार्य करते हैं, आप पर प्रसन्न होते हैं और अपनी तरफ से आपको भी पुष्ट करते हैं।

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥

'तुम इस यज्ञ (ईश्वरप्राप्ति →

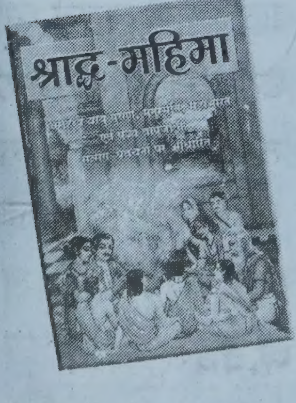
सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ

कैसा भी बिखरा हुआ जीवन हो, सँवर जायेगा - पूज्य बापूजी

अगर अशांति मिटानी है तो दोनों नथुनों से श्वास लें और **'ॐ शान्तिः... शान्तिः'** जप करें और फिर फूँक मार के अशांति को बाहर फेंक दें। जब तारे नहीं दिखते हों, चन्द्रमा नहीं दिखता हो और सूरज अभी आनेवाले हों तो वह समय मंत्रसिद्धि योग का है, मनोकामना-सिद्धि योग का है। इस काल में किया हुआ यह प्रयोग अशांति को भगाने में बड़ी मदद देगा। अगर निरोगता प्राप्त करनी है तो आरोग्यता के भाव से श्वास भरें और आरोग्य का मंत्र **'नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥'** जपकर 'रोग गया' ऐसा भाव करके फूँक मारें। ऐसा १० बार करें। कैसा भी रोगी, कैसा भी अशांत और कैसा भी बिखरा हुआ जीवन हो, सँवर जायेगा।

→ के लिए किये जानेवाले कर्मों) के द्वारा देवताओं को तृप्त करो और (उनसे तृप्त हुए) वे देवगण तुम्हें तृप्त करें। इस प्रकार (निःस्वार्थ भाव से) एक-दूसरे को तृप्त या उन्नत करते हुए तुम परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे।'

(गीता : ३.११)



देवताओं का हम पोषण करें तो वे सबल होते हैं और सबल देवता वर्षा करने, प्रेरणा देने, हमारी इन्द्रियों को पुष्ट करने में लगते हैं। इससे सबका मंगल होता है।

(श्राद्ध से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें आश्रम द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'श्राद्ध-महिमा')

अन्नपूर्णा प्रयोग

प्रति पूर्णिमा को घर के अन्न-भंडार के स्थान पर कपास तेल का दीपक जलायें। इसके प्रभाव से घर की रसोई में बहुत बरकत होती है। यह अन्नपूर्णा प्रयोग है। ❐

पुण्यदायी तिथियाँ व योग

१७ सितम्बर : पद्मा एकादशी (व्रत करने व माहात्म्य पढ़ने-सुनने से सब पापों से मुक्ति), षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२:३४ तक) (ध्यान, जप व पुण्यकर्म का ८६,००० गुना फल)

२९ सितम्बर : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से रात्रि ८:३० तक)

३० सितम्बर : गुरुपुष्यामृत योग [रात्रि १:३३ (अर्थात् १ अक्टूबर १:३३ AM) से १ अक्टूबर सूर्योदय तक] (ध्यान, जप, दान, पुण्य महाफलदायी)

२ अक्टूबर : इंदिरा एकादशी (बड़े-बड़े पापों का नाशक तथा नीच योनि में पड़े हुए पितरों को भी सद्गति देनेवाला व्रत)

७ अक्टूबर : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का ५८वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस, शारदीय नवरात्र प्रारम्भ

१३ अक्टूबर : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से रात्रि ८:०८ तक)

१५ अक्टूबर : विजयादशमी (पूरा दिन शुभ मुहूर्त), विजय मुहूर्त (दोपहर २:१५ से ३:०१ तक) (संकल्प, शुभारम्भ, नूतन कार्य, सीमोल्लंघन के लिए), दशहरा, गुरु-पूजन, अस्त्र-शस्त्र-शमी वृक्ष-आयुध-वाहन पूजन

(अधिक जानकारी हेतु आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर एवं समितियों में उपलब्ध कैलेंडर, डायरी लें।)

इसको दूर करो तो सब दोष दूर !

सुखी जीवन जीने के लिए एक बड़ी कीमती और सारभूत बात है। यदि यह ठीक से समझ ली और दृढ़ता से पकड़ ली तो किसी भी दुःख की ताकत नहीं कि आपको छू तक सके।

मानव का अपना बनाया हुआ यह महान दोष है कि जिनसे अपना कोई संबंध नहीं है, जो किसी प्रकार भी अपने नहीं हो सकते उन मन, बुद्धि और इन्द्रियों के समूहरूप शरीर को और उससे संबंधित पदार्थों को अपना मान लिया है तथा जिन पर किसी प्रकार भी विश्वास नहीं करना चाहिए उन पर विश्वास कर लिया है। जिन परम सुहृद परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए, जो सब प्रकार से विश्वास के योग्य हैं और सजातीय★ होने के नाते जो सचमुच सब प्रकार से अपने हैं, उन पर न तो विश्वास करता है न उन्हें अपना मानता है और न वर्तमान में उनकी आवश्यकता का ही अनुभव करता है। यही एक ऐसा महान दोष है जिससे सब प्रकार के बड़े-बड़े दोष उत्पन्न हुए हैं और होते रहते हैं। अतः इस दोष का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

यह दोष मनुष्य का अपना बनाया हुआ है इसलिए स्वयं ही इसे दूर करना पड़ेगा। अपने बनाये हुए दोष को दूर करने में कोई भी साधक असमर्थ नहीं हो सकता। इस पर भी यदि उसे अपनी कमजोरी का भान हो, यदि वह अपने को सचमुच असमर्थ समझता हो तो उसे निर्बलता के दुःख से दुःखी होकर उस सर्वसमर्थ प्रभु की शरण में जाना चाहिए जो निर्बलों के बल हैं, पतितों को पवित्र बनानेवाले और दीनबंधु हैं। निर्बलता के दुःख से दुःखी साधक को उस निर्बलता का नाश होने से पहले चैन कैसे पड़ सकता है। ❐

★ **जीवात्मा परमात्मा का अविभाज्य स्वरूप होने से उसकी और परमात्मा की जाति समान है।**

श्री उड़िया बाबाजी के साथ प्रश्नोत्तरी

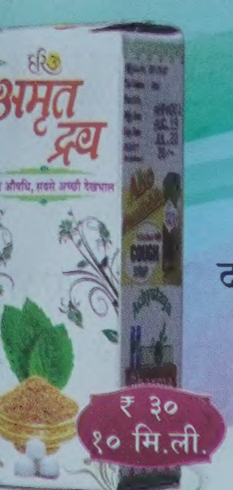
प्रश्न : सत्संग करने से क्या लाभ है ?

उत्तर : सत्संग करने से भगवान में हमारी आसक्ति दिनोंदिन बढ़ती है। जिस वस्तु का निरंतर चिंतन होगा उसमें आसक्ति बढ़ेगी ही इसलिए निरंतर सत्संग करना चाहिए।

प्रश्न : सत्संग न करने से क्या हानि है ?

उत्तर : भजन तो एकांत में भी कर सकते हैं परंतु काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दोष सत्संग किये बिना दूर नहीं हो सकते। सत्संग में इन्हींके नाश करने की बातें होती हैं। इसलिए सत्संग में जाने से अवगुण छोड़ने की इच्छा होती है और फिर प्रयत्न करने पर अवगुण छूटते हैं। बिना सत्संग किये प्रायः बहुत भजन करनेवालों के भी दोष नहीं छूटते और जो सत्संग करेगा वह भजन अवश्य करेगा। जो सत्संग करेगा उसके पाप न छूटें यह असम्भव है। सत्संग एक बिजली है, उस वायुमंडल में बैठ जाने मात्र से ही अंतःकरण पवित्र हो जाता है क्योंकि वहाँ का वायुमंडल ही पवित्र है। इसलिए सत्संग की निंदा करनेवाले भी वहाँ जाने लगने पर पवित्र हो जाते हैं और धीरे-धीरे वे भी भगवत्परायण होने लगते हैं। सत्संग की महिमा का कोई वर्णन ही नहीं कर सकता। सत्संग से महापुरुषों में प्रीति होगी। **कुछ भी न करके सत्संग में जाकर केवल बैठ ही जाय तो भी लाभ होता ही है।** ❐

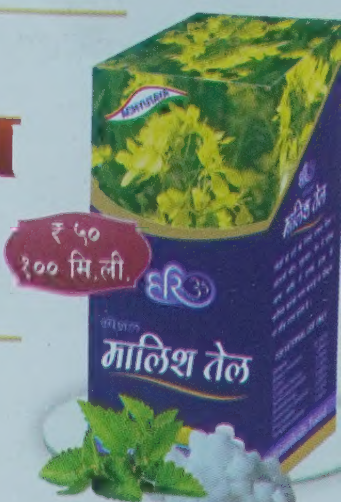
अमृतबिंदु **पापी व्यक्ति भी अगर सत्संग में बैठता है तो उसके पाप टिक नहीं सकते। सत्संगति मोक्ष का मूल है। सत्संगति ब्रह्म की, सच्चे जीवन की प्राप्ति कराती है। - पूज्य बापूजी**



अमृत द्रव

यह एक बहुत ही असरकारक औषधि है । इसके प्रयोग से सर्दी-जुकाम, खाँसी, सिरदर्द तथा गले एवं दाँतों के रोगों में लाभ होता है । संक्रमण से रक्षा हेतु इसकी कुछ बूँदें कपड़े या रूई के फाहे पर ले के सूँघें ।

स्पेशल मालिश तेल



यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है । अंदरूनी चोट, पैर में मोच आदि में हलके हाथ मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है ।



कफ सिरप

यह सभी प्रकार के श्वासनली के विकार, सर्दी, खाँसी, दमा तथा सूखी खाँसी में लाभकारी है । बच्चों व बड़ों सभीके लिए उपयोगी है ।



घृतकुमारी (Aloe vera) व नीम युक्त

हरि ॐ हैंड सैनिटाइजर

९९.९ % कीटाणुओं को तुरंत नष्ट करने में सक्षम !

बाजार, अस्पताल, ऑफिस, कार में हों या हों यातायात में... खेलकूद, खाँसने-छींकने अथवा र्वजनिक स्थानों से आने के बाद... बीमार व्यक्ति या पालतू पशुओं को छूने के बाद... अर्थात् कहीं भी, भी भी... साबुन और पानी की अनुपलब्धता में भी रखें हाथों को कीटाणुमुक्त ।

रोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत भ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

वनौषधियों का सेवन करनेवाली श्योपुर गौशाला की गीर व अन्य देशी नस्ल की गायों का

स्वर्णक्षार युक्त शुद्ध देशी घी

देशी गाय के स्वर्णक्षार युक्त शुद्ध घी को धरती का अमृत कहकर नवाजा गया है, जो आँखों के लिए विशेष लाभकारी, जठराग्नि तथा बल-वीर्य वर्धक, त्रिदोषशामक एवं स्मृति, बुद्धि व मेधाशक्ति वर्धक तथा लावण्य, कांति व ओज-तेज की अत्यंत द्धि करनेवाला एवं अलक्ष्मी (निर्धनता, दुर्भाग्य), पाप आदि को दूर करनेवाला, मंगलदायक, सुगंधयुक्त, रसायन (tonic), रोचक, र्घ जीवन व यौवन प्रदायक एवं समस्त घृतों में उत्तम तथा अधिक गुणकारी है ।

गाय के घी का दीपक जलाने से वातावरण पवित्र, विशुद्ध व मंगलकारी होता है । रूसी वैज्ञानिक शिरोविच के अनुसार एक चम्मच (१० ग्राम) गोघृत की कुछ बूँदें अंगारों पर या गौ-कंडों पर डालते रहने से पवित्र, ऊर्जावान एक टन प्राणवायु (ऑक्सीजन) बनती है, जो अन्य किसी भी उपाय से सम्भव नहीं है ।



श्योपुर गौशाला की गायें हजारों एकड़ जंगल में फैली हुई वनौषधियों का सेवन करती हैं । उनके दूध में दिव्य औषधीय तत्त्व पाये जाते हैं । उस दूध से बना यह शुद्ध घी विशेष गुणकारी है ।

- १ लीटर (९१० ग्राम) : ₹ १४०० • ५०० मि.ली. (४५५ ग्राम) : ₹ ७०० • २५० मि.ली. (२२८ ग्राम) : ₹ ३६०

प्राप्ति हेतु सम्पर्क : ७२२२९६३५२४, ७०१८१५३५३४



मनुष्यमात्र की माँग अमिट सुख की पूर्ति का ज्ञान 'ऋषि प्रसाद' द्वारा घर-घर पहुँचाते बापूजी के प्यारे

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31
Licence to Post without Pre-pa
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31
Posting at Dehradun G.P.O.
1st to 17th of every mon
Date of Publication: 1st Se





स्वतंत्रता दिवस पर युवा सेवा संघ ने निकालीं देशभक्ति व संस्कृति-रक्षा य



भंडारों में अनाज व अन्य जीवनोपयोगी सामग्री तथा भोजन-प्रसाद का वि



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

डाउनलोड करें "Rishi Prasad" व "Rishi Darshan" Apps - Google play Store